मौत का मन्ज़र

हज़रत मौलाना मौलवी हाफ़िज़ मुहम्मद इसहाक़ मरहूम



मौत का मंज़र

मुसन्निफ़

हज़रत मौलाना मौलवी हाफ़िज़ मुहम्मद इसहाक़ मरहूम

प्रकाशक

अन्जुम बुक डिपो

मटिया महल, जामा मस्जिद, दिल्ली –110006

किताब का नाम	मौत का मन्ज़र
मुसन्निफ़	हज़रत मौलाना मौलवी हाफ़िज़ मुहम्मद इसहाक़ मरहूम
प्रकाशन	2006
ज़ेरे निगरानी	शकील अन्जुम देहलवी
तादाद	1100
क़ीमत	

MAUT KA MANZAR

By: Hazrat Maulana Maulvi Hafiz Mohd.
Ishaaq Marhoom

Published By :

Anjum Book Depot

Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-6

मिलने का पता

फ़रीद बुक डिपो प्राईवेट लिमिटेड

2158–59, एम पी स्ट्रीट, पटौदी हाउस, दरिया गंज, न्यू दिल्ली–110002

بسم الله الرحمٰن الرحيم

मौत का मंज़र

كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ وَّ يَبْقٰى وَجْهُ رَبِّكَ ذُو الْجَلَالِ وَ الْإِكْرَامِ

यानी : ऐ नबी ﷺ! जितनी मख़्लूक़ात रूऐ ज़मीन की हैं सब फ़ना होने के लिए हैं। और बाक़ी रहने के लिए सिर्फ़ एक तुम्हारे परवरदिगार की ज़ात आली है।

हमेशगी है फ़क़त ज़ाते मुत़लक़न के लिए
सिवाए उसके हैं चौदा त़बक़ फ़ना के लिए

ख़ातिमुल अंबिया जनाब मुहम्मद रसूलुल्लाह ﷺ ने एक रोज़ हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर رضی के कंधे पर हाथ रखा और फ़रमाया अब्दुल्लाह ख़बरदार हो जाओ। और देखो दुनिया में इस तरह रहो जैसे कि कोई मुसाफ़िर रहता है। नहीं बल्कि जैसे कोई मुसाफ़िर रास्ता चलता हुआ होता है। और ऐ इब्ने उमर رضی जब तुम पर शाम हो तो सुब्ह का इंतिज़ार करो और बीमारी से तन्दुरुस्ती को ग़नीमत जानो नीज़ मरने से जीने को ग़नीमत समझो! (सहीह बुख़ारी)

नज़्म

ग़नीमत समझ ज़िन्दगी ऐ फ़ता — कि तीरे क़ज़ा चल चुका चल चुका
इधर सांस दिन गिन रहे हैं तेरे — उधर क़ब्र मुँह अपना फाड़े हुए
मुसाफ़िर है मुल्के अदम का बशर — और उस पर तेरा हैफ़ यह कर्रो फ़र
ज़रा कूच का हाल मालूम कर — कि आख़िर को होना है ज़ेर व ज़बर

वह क्या शान होगी मुसाफ़िर तेरी
घड़ी तुझ पे जब आएगी मौत की

मौत की सूरत

हमारे दिल में जो बस जाए मौत की सूरत
यक़ीन जानिये हो और ज़रूर हो इबरत

फ़ेहरिस्ते मज़ामीन

अगर कोई शख़्स सोता रहे तो रेल भी निकल जाएगी और नमाज़ भी क़ज़ा हो जाएगी। मुक़द्दमा की यक तरफ़ा डिग्री भी हो जाएगी। और उस का माल भी चोरी हो जाएगा। नीज़ सोता हुआ आदमी किसी इनाम का मुस्तहिक़ है और न कोई नेमत उसे मिल सकती है। वह शहन्शाही जुलूस गुज़रता हुआ देख सकता है न किसी पुर फ़ज़ा चमन की सैर कर सकता है ग़र्ज़ कि हर नेमत से वह महरूम है और यह महरूमी उसे इस लिए पेश आई कि اَلنَّوْمُ نِصْفُ الْمَوْتِ यानी सो रहना आधा मर जाना है। पस मरा हुआ शख़्स तमाम जिस्मानी नेमतों से महरूम रहता है। यही मिस्ल इस्लामी रूहानियत की है कि जब कोई मर्द मुसलमान इस्लामी फ़राइज़ से ग़ाफ़िल होता है तो उसे तमाम रूहानी नेमतों से महरूम होना पड़ता है। नमाज़ी नमाज़ पढ़ रहे हैं। जिन के लिए एक एक नमाज़ के बदले जन्नत के बे इन्तिहा महल तैयार हो रहे हैं मगर बे नमाज़ी ग़फ़लत के सबब जन्नत से अपनी मीरास मुनक़तअ कर रहे हैं। नीज़ रोज़ा दार अपनी बेदारी के तुफ़ैल रोज़े रख रहे हैं और दीदारे ख़ुदावंदी के मुस्तहिक़ हो रहे हैं। मगर रोज़ा ख़ोर अपनी ग़फ़लत के हाथों न सिर्फ़ शआइरे इस्लाम पर हमलाआवर होते हैं बल्कि अपना घर जहन्नहम में बना रहे हैं। हम ने आज तक नहीं सुना कि कोई अपनी ला इल्मी से जुर्म का मुर्तकिब होकर अदालते फ़ौजदारी या कलकटरी से साफ़ बरी हो सका हो हमें अब तक नहीं मालूम हुआ कि कोई ग़ाफ़िल किसी बेदार से आगे निकल सका हो। बल्कि हम तो आम लोगों की ज़बानों पर ज़र्बुलमिस्ल भी यही सुनते हैं कि जागते की कटिया और सोते का कटड़ा। हमें तो यही मालूम है कि सोया और मरा बराबर है न उसे कुछ ख़बर न उसे कुछ होश। बहरहाल ग़फ़लत या सोना इन्सान की मजाज़ी मौत है। जो ऊपर बयान हुई। अब हक़ीक़ी मौत का ख़ौफ़नाक मंज़र मालूम कीजिये। जो एक एक मुतनफ़्फ़िस या हर ज़ी रूह के सर पर मंडला रहा है। और क़रीब है कि उस की नावँ को किनारे लगा दे, और उसके टिमटिमाते हुए चिराग़ को हमेंशा के लिए गुल कर दे।

जिस की सूरत यह है कि चारपाई पर एक बीमार लेटा हुआ है जिस के

रुफ़का चारों तरफ़ खड़े और बैठे हैं। कोई दवा पिलाता है। कोई शहद चटाता है। दवा इस बाछ से निकल जाती है और शहद उस बाछ से बह जाता है चेहरा पर ज़र्दी खिन्ड रही है। माथे पर पसीना आ रहा है। सीने में एक पीस डालने वाली चक्की चल रही है। हल्की हल्की जमाइयाँ आ रही हैं ठन्डे और लम्बे लम्बे सांस ले रहा है। आँखें आसमान को चढ़ी जा रही हैं और उन में से पानी होकर नूर बह रहा है। तमाम जिस्म के रोंगटे खड़े हो रहे हैं। हिचकियाँ आ रही हैं। सुब्कियां ले रहा है मुँह पर महताबियाँ छूट रही हैं।

ग़ज़ल

आज तैयारी यह क्या होती है रूह क्या तन से जुदा होती है
क्या बसा घर यह उजड़ने को है जान क़ालिब से ख़फ़ा होती है
ऐ बशर कोई भी खूबी न रही आख़िरी यह भी अदा होती है
मुद्दतों नाज़ व नअ़म में रह कर आज वह जान हवा होती है
अब तेरी जान चली ऐ इन्सान अब क़यामत सी बपा होती है
अब तुझे देखना होगा वह घर जिस में तन्हाई सिवा होती है
अब तुझे छोड़ना होगा सब कुछ अब तेरी जान फ़िदा होती है
अब तुझे रोएंगे रोने वाले अब तेरे हक़ में दुआ होती है
अब तुझे उस की हुज़ूरी होगी आह वाँ देखिए क्या होती है

तो चारों तरफ़ से कलिमा पढ़ने की आवाज़ आने लगी है और एक नए विछड़ने वाले के रफ़ीक़ हल्की हल्की आवाज़ से لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه की तलक़ीन कर रहे हैं। जिन में एक सिरहाने बैठा सूरह यासीन सुना रहा है कि इतने में दो तीन हिचकियाँ, एक दो सुब्कियां लेकर चलने वाला चल बसा اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ راجِعُوْن

नज़्म

हो गई अफ़सोस सब तुर्की तमाम
हाए दुनिया हाए यह तेरा मक़ाम
जी के जी में रह गई अफ़सोस है
थी कोई शै वह नहीं अब कोई शै
कुछ कही अपनी न औरों की सुनी
चुपके चुपके जो पड़ी वह झेल ली
सुब्कियां ले ले के कैसी जान दी
हाए तू ने आह तक मुहँ से न की
चुप चुपाते कूच दुनिया से किया
दाग़े फ़ुरक़त कैसा अपनों को दिया
रोते हैं छोटे बड़े पीर व जवाँ
तेरी मैयित है मगर तू है कहाँ
है फ़ क्या पिंजरा यह अब खाली हुआ
क्या चहकता उसका बुलबुल उड़ गया
कुछ तो मुँह से बोल ऐ मर्दे खुदा
शहरे खामोशां की दे कुछ तो सदा
यह ज़बाने हाल से आई सदा
क्या बताऊँ मुझ पे बस गुज़री है क्या
ऐ मेरे अपनों ज़रा दिल से सुनो
चुपके हो जाओ न वावेला करो!
क़ीमा क़ीमा मौत ने मेरा क्यिा
जो न देना था वह दुखः मुझ को दिया
बर्छियां रग रग में उतरीं मौत की
चुप चुपाते आह बस झेलीं सभी
ज़िन्दगी में कोई दुखः ऐसा नहीं
मौत की तल्ख़ी जो है ऐ हम नशीं
ज़ायक़ा उस का न भूलेगा कभी
जन्नती हो आदमी या दोज़ख़ी
काश इस मौक़ा से इबरत हो तुम्हें
काश इस दुनिया से नफ़रत हो तुम्हें

फ़िर हाथ पावँ सीधे करके मुँह पर ढाटा बान्ध दिया जाता है। और एक कपड़ा ढांक कर रोते हुए अलग हो जाते हैं। और तैयारी शुरू होती है। का हे की ?

एक़ दिल सोज़ को कफ़न पहनाने की, एक रफ़ीक़ को क़ब्र में उतारने की, लीजिए! वह बाज़ार से कफ़न और खुशबूऐं आ गयीं। और साथ जाने का तमाम सामाने दहेज़ घर में आन फ़ैला। और अब इस दूल्हा या दुल्हन की रुख़्सती में शरीक होने के लिए बाराती आने शुरू हो गए मर्द बहालते खुद चले आते हैं। और समधियाने की औरतें। मिस्सी, सुर्मा, कंघी चोटी गहने, पाते, गोटे ठप्पे के कपड़े पहन पहन कर छमा छम उतरनी शुरू होती हैं। इबरत!! घर वाले मुर्दे को छोड़ कर उन मुअज़्ज़ज़ बारातियों का आगा तागा

लेने में मसरूफ़ हो जाते हैं। पानों की ढोलियां आ रही हैं चोघड़ा इलाइचियां चली आती हैं। गिलोरियों पर गिलोरियां चल रही हैं। और मय्यित के घर में से बराबर छमा छम की आवाज़ें चली आती हैं। जिस से यह मालूम होता है कि मय्यित के इस्तक़बाल के लिए जन्नत से हूरें आई हैं। अफ़सोस सद अफ़सोस।

मौत की सख़्ती

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीक़ा رضی ﷲ عنہا फ़रमाती हैं कि मैं किसी के लिए मौत की आसानी नहीं चाहती हूँ। क्योंकि मैंने हुज़ूर ﷺ की सख़्तिए वफ़ात खूब इन आँखों से देखी है। (तिरमिज़ी व नसाई)

नीज़ आप फ़रमाती हैं कि मैंने नबी ﷺ को ऐन वफ़ात की हालत में देखा जिन के पास एक प्याला रखा था। और उस में पानी भरा हुआ था। और आप ﷺ बार बार अपना हाथ उस प्याले में डाल कर अपने मुँह पर फेरते थे। और फ़रमाते थे, اَللّٰهُمَّ اَعِنِّیْ عَلٰی سَكَرَاتِ الْمَوْتِ खुदा वंदा! मौत की सख़्ती मुझ से दूर फरमाना।

इस हदीस के मुतअल्लिक़ साहिबे मज़ाहिरे हक़ लिखते हैं कि आप ﷺ पानी से हाथ तर करके चेहरे पर फेरते थे ताकि फिलजुम्ला मौत की गर्मी दफ़ा हो। नीज़ आँहज़रत ﷺ को मौत की तकलीफ़ होने के मुताल्लिक़ शारिहीने हदीस ने बहुत सी वजह लिखीं हैं। जिन में एक सब से ज़्यादा तसल्ली बख़्श वजह यह बयान की गई है कि मुबादा उम्मत के मोमिनीन व मोमिनात अपनी सख़्तिये मौत देखकर घबरा न जाएं और गूना उन्हें तसल्ली रहे और सब्र से काम लें ताकि सख़्तिये मौत में आसानी हो।

नज़म

याद कीजिए पुतलए आदम को आप
जो हमारे आप के हैं सब के बाप
जिन का क़ालिब बन चुका है बस तमाम
रूह की अब देर है ऐ ख़ास व आम
इतने में हुक्मे खुदावंदी हुआ
रूहे आदम को यह बस आई निदा
पुतलए आदम में दाख़िल हो अभी
है यही ऐ रूह बस मर्ज़ी मेरी

आई दाख़िल होने को रूहे बशर
डर गई अन्दर अंधेरा देख कर

आजिज़ी की उस ने और यह अर्ज़ की
क्यों कर होगी इस में मेरी ज़िन्दगी

इक अन्धेरा घर है वह भी पुरख़तरार
क्योंकर हो मेरा भला उस में गुज़र

दे मआफ़ी मुझ को तू ऐ ज़ुलमनन
है यह कैसा खानए रंज व मेहन

रूह को फिर हुक्मे आली यह हुआ
मानना होगा तुझे कहना मेरा

रूह ने फ़िर दाख़िले की फ़िक्र की
और डरकर सहम कर फिर रह गई

फिर हुई अर्शे मुअल्ला से निदा
हुक्म है मेरा अभी तू उस में जा

रूह फ़िर रोती हुई दाख़िल हुई
पुतलए आदम में मुश्किल से गई

जिसको फ़रमाते हैं ख़त्मुल मुरसलीं
राज़ एक कुदरत का है यह बिलयक़ीं

जिस तरह मुश्किल में यह दाख़िल हुई
नज़अ में भी होगी बस मुश्किल वही

काश यह खुश खुश अगर जाती वहाँ
नज़अ में तकलीफ़ क्यों होती है यहाँ

तकलीफ़ के बाद राहत

हज़रत याहया इब्ने सईद ﵁ फ़रमाते हैं कि जनाबे रसूल मक़बूल ﷺ के ज़माने में एक शख़्स मर्गे मफ़ाजात में यकायक मर गया तो एक शख़्स ने उस की निसबत कहा कि क्या मुबारक मौत यह शख़्स मरा है कि न तो किसी मर्ज़ में मुबतला हुआ और न क़िसी क़िस्म की उसे तकलीफ़ हुई। यह सुनकर हुज़ूर ﷺ ने फरमाया ऐ शख़्स! वाए है तुझ पर। किस एतेबार से तू उसके यकाएक मरने की तारीफ़ करता है? नहीं! बल्कि याद रख इस बात को कि अगर अल्लाह तआला उसकी मौत इस हाल में भेजता कि वह बीमारी और सख़्ती में मुबतला होता तो उस की ज़िन्दगी भर की बुराइयां और मआसी दूर हो जाते। (मिश्कात शरीफ़)

नीज़ हज़रत अबू हुरैरह ﵁ रिवायात करते हैं कि फरमाया जनाब रसूलुल्लाह ﷺ ने कि जो शख़्स बीमार होकर मरता है वह शहादत के मर्तबा को पहुंचता है और अज़ाबे क़ब्र से उसे नजात मिलती है और हमेशा सुब्ह व शाम उस को रूहानी नेमतें दी जाती हैं। (इब्ने माजा)

नीज़ हज़रत अनस ऐक हदीसे कुदसी हुज़ूर नबीﷺ से नक़्ल फरमाते हैं कि अल्लाह तबारक व तआला इरशाद फरमाता है: क़सम है मुझे अपनी शाने किबरिया की जब मैं किसी की निसबत यह इरादा करता हूँ कि उसे अपनी बख़शिश और रहमत में लूं तो दुनिया से उसे इस हाल में उठाता हूँ कि वह दुनिया में अपनी तमाम मासियत और गुनाहों का बदला पा सकता है और क़िस्म क़िस्म की बीमारी और तरह तरह की तंगी में मुबतला हो चुकता है। (मिश्कात शरीफ़)

नीज़ हज़रत इब्ने सारिया से रिवायत है कि हुज़ूरﷺ ने इरशाद फ़रमाया कि क़यामत के रोज़ वे लोग जो अपने बिछौने पर मरे हैं और वे लोग जो राहे खुदा में शहीद हुऐ हैं आपस में झगड़ा करेंगे। शोहदा कहेंगे कि खुदावंदा! हम तेरी राह में शहीद हुए और ये लोग अपने बिछौने पर ताऊन वग़ैरह से मरे हैं दोनों मर्तबा में किस तरह बराबर हो सकते हैं ? पस शोहदा के जवाब में इरशादे खुदावंदी होगा कि ऐ मलाइक शहीदों और उन लोगों के ज़ख्मों को देखो जो ताऊन वग़ैरह में मुबतला हो कर अपने बिसतरों पर मरे हैं और बताओ कि इन दोनों के ज़खमों में क्या फ़र्क़ है। पस नागाह इन बीमारों और इन शहीदों के यानी दोनों के ज़ख़्म बिल्कुल मसावी और बराबर नज़र आएंगे जिस के सबब सवाब और मर्तबा दोनों का यकसां होगा। (नसाई शरीफ़)

नज़म

तंगी व तुर्शी से घबराता नहीं
है उसी में फ़ज़्ले रब्बुलआलमीं
कितने ही बीमार हो जाओ अगर
रहमते मन्नान समझो सर बसर
जिस क़दर तकलीफ़ होगी दोस्तों
पाक हो जाओगे इस को सुन रखो
जितनी होगी सख़्त बीमारी तुम्हें
आ मिलेगी रहमते बारी तुम्हें
जिस क़दर खुश होंगे बस मौला से तुम
तुम जाओगे खुशनूद में दुनिया से तुम
ज़िन्दगी में तुम अगर राज़ी रहे
नज़अ में उसकी रिज़ा तुम को मिले
बाद हर तकलीफ़ के राहत ज़रूर
देने वाला है मेरा रब्बे ग़फ़ूर

मुसाफ़िर की रवान्गी

लीजिए एक मुसाफ़िर की रवान्गी या दुल्हा दुल्हन की बरात उठती है और अला क़दरे तअल्लुक़ मजमा अच्छा ख़ासा हो गया है। अरे मियां क्या देर है ? क्यों भई क्या देर है हर कोई कहता हुआ चला आता है और देखो दुल्हन को गुस्ल दिया जाना शुरू हो गया है। पानी गर्म व सर्द का पूरा लिहाज़ व ख़याल है। देखना किसी आज़ा को तकलीफ़ न हो। और सब काम आहिसता आहिसता हों जब गुस्ल से फ़ारिग़ हो गए तो अब उस मुसाफिर को सफर का लिबास पहनाया जाता है जो काफूर में बसा हुआ है। औरत है तो पांच कपड़े और मर्द है तो तीन कपड़े आख़िरी पहना दिये जाते हैं और फिर एक थैले में लपेट कर बांध दिया जाता है जो बदला है खुले फिरने का, जो बदला है एक बड़ी आज़ादी व खुदमुख़तारी का। बहर हाल एक मसनदे बोरिया पर वह कूच करने वाला मुसाफ़िर या हमेशा के लिए रुख़सत होने वाला दूल्हा सफ़ेद लिबास पहने लेटा है। जिस पर चारों तरफ़ से आंसुओं के मोती निछावर हो रहे हैं, और एक खुदा से शर्माए हुए की घूंघट हटा हटा कर मुँह दिखाई हो रही है। जो ग़रीब न मुँह से बोले और न सर से खेले अपनी कहे न दूसरे की सुने। खामोश लेटा है और ज़बाने हाल से यह कह रहा है :

नज़्म

लो बस अब जाने दो मुझ को दोस्तो — रिश्तए उल्फ़त दिलों से तोड़ दो
तुम से मैं रूठा खफ़ा तुम से हुआ — और अपना मैंने बस रस्ता लिया
अब तुम्हारा मैं न तुम मेरे रफ़ीक़ — अब तो बस मुझ को यही सूझा तरीक़
मुंह छुपाकर तुम से गायब ही रहूँ — क़ब्र में सुखः नीन्द जाकर सो रहूँ
देर से है मुंतज़िर तुर्बत मेरी — बस उठाओ जूदे तर मैयित मेरी
ले चले दुल्हा बना कर ले चले — ले चले बस आख़िरी घर ले चले
गुल हुआ कोहराम वह घर में मचा — हो गया गोया वहाँ महशर बपा

हज़रत अबी सईदؓ से रिवायत है कि फ़रमाया जनाबे रिसालत मआबﷺ ने जिस वक़्त कि जनाज़ा तैयार करके लोग उसे कंधों पर उठाते हैं तो मैयित कहती कि लोगो मुझे मेरी मंज़िल की तरफ़ जल्दी ले चलो और नापाक मैयित कहती है कि हाए मेरी ख़राबी! लोगों तुम मुझे कहाँ लिए जाते हो ? पस यह दोनों मैयितों की आवाज़ें सिवाए इन्सान के और हर शै सुनती है। और अगर इन्सान उन आवाज़ों को सुने तो मर जाए या वे होश हो जाए। (बुख़ारी शरीफ़)

नीज़ हज़रत क़तादहؓ से रिवायत है कि एक रोज़ हुज़ूरﷺ के सामने एक जनाज़ा लाया गया। जिसे देखकर हुज़ूरﷺ ने फ़रमाया यह राहत पाने वाला है या इससे औरों को राहत होने वाली है। यह सुनकर सहाबा ने अर्ज़ किया हुज़ूर! कौन है राहत पाने वाला और कौन है जिस से औरों को राहत होने वाली है ? हुज़ूर ने फ़रमाया लोगों! बन्दए मोमिन अपनी मौत की वजह से तमाम दुनियावी रंज व अलम से राहत पाने वाला है और बन्दए फ़ाजिर या गुनहगार की मौत के सबब लोग उस के शर और तकलीफ़ से राहत पाने वाले होते हैं (बुख़ारी, मुस्लिम)

नीज़ रिवायत है हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊदؓ ने फ़रमाया कि जनाब रसूलुल्लाहﷺ ने जनाज़ा ताबेअ़ किया गया है कि लोग उस के पीछे चलें और नहीं है ताबेअ़ कि वह लोगों के पीछे रहे पस जो शख़्स जनाज़े से आगे आगे चलता है। वह हमराही का सवाब नहीं पा सकता है (तिरमिज़ी)

नीज़ हज़रत अबू हुरैरहؓ फ़रमाते हैं कि इरशाद फ़रमाया हुज़ूरﷺ ने कि जो शख़्स जनाज़े के साथ चले और तीन बार उस को कंधा दे तो उसने उस मैयित का हक़ अदा कर दिया जो कि हर एक मोमिन का दूसरे मोमिन पर हक़ है (मिश्कात शरीफ़)

नीज़ हज़रत उमरؓ से रिवायत है कि फ़रमाया जनाबे रसूलुल्लाहﷺ ने لَا تَذْكُرُوْا مَوْتَاكُمْ اِلَّا بِخَيْرٍ यानी मरने वाले को हमेशा भलाई से याद किया करो। इस लिए कि जिस को चार मुसलमान भलाई से याद करेंगे अल्लाह तआला उसे बहिश्त में दाख़िल करेगा। हज़रत उमरؓ फ़रमाते हैं कि हुज़ूर

आक़ाए नामदारﷺ से मालूम किया गया कि अगर तीन शख़्स उसे अच्छा कहें तब ? फ़रमाया अगर तीन शख़्स भी उसे अच्छा कहें तब भी वह जन्नत में दाखिल किया जाता है। कहते हैं कि फिर हमने दरयाफ़्त किया कि हुज़ूर! अगर दो शख़्स किसी को अच्छा कहें तब ? फ़रमाया अगर दो शख़्स भी किसी का अच्छा कहेंगे तब भी जन्नत में दाख़िल किया जाएगा। हज़रत उमर रज़ि० फ़रमाते हैं फिर इस से आगे हम ने नहीं सवाल किया

(बुख़ारी व मुस्लिम)

नज़म

रहम मुर्दों पर करो ऐ मोमिनो
साथ ज़िन्दों के न तुम उनको गिनो!
उन को बस जन्नत में तुम दाखिल करो
दीन व ईमां अपना तुम कामिल करो
मरने वालों की मुज़म्मत ज़ुल्म है
अहले उक़बा की हिक़ारत ज़ुल्म है
मरने वाले आह तेरी आजिज़ी
बेकसी तुझ पर बरसती है बड़ी
हसरतें रोती हैं तेरे ढेर पर
खाक ने तुझ को किया ज़ेरो व ज़बर
रेज़ह रेज़ह हो गया तुर्बत में तू
हो गई सब खाक तेरी आरज़ू
तुझ पे क्या गुज़री खुदा जाने वहाँ
क्यों कर पेश आया खुदाए दो जहाँ
कैसी देखी उसकी पेशी ऐ ग़रीब
कैसे वाँ जाकर खुले तेरे नसीब
कुछ तो कह क्या क्या हुए तुझ से सवाल
क्या बनी वाँ और हुआ क्या तेरा हाल

क़ब्र की बातें

(ماخوذ از کیمیاء سعادت للغزالی)

रसूले करीमﷺ ने फ़रमाया है कि जिस वक़्त मुर्दे को क़ब्र में रखते हैं तो क़ब्र कहती है : ऐ इब्ने आदम तू किस लिए मुझे भूला हुआ था। और क्या तुझे यह मालूम न था कि मैं ज़ुल्मत और तन्हाई और कीड़ों का घर हूँ ? ऐ इब्ने आदम ! किस बात पर भूला हुआ था और किस बूते पर फूला हुआ था जो मुझ पर ऐंठता हुआ एक पाँव आगे और एक पीछे डाल कर चलता था ? पस वह मुर्दा अगर सालेह है तो उसकी तरफ़ से कोई फ़रिश्ता जवाब देता है कि ऐ क़ब्र! तू कहती है ? देख यह शख़्स नेक था। और दूसरों को भी

नेकियाँ बताता था। जिस के जवाब में क़ब्र कहती है :

नज़म

क्यों न हो जाऊं बाग़ उस के लिए   खुल्द के बस चिराग़ उस के लिए
नेक दुनिया में जो रहा बन्दा   उस को रहमत का याँ नहीं मंदा

नूर होता है फ़िर बदन उस का
रूह होती है आसमां को हवा

नीज़ हदीस में वारिद है कि जब फ़ासिक़ मुर्दे को क़ब्र में रखते हैं तो उस पर अज़ाबे क़ब्र होना शुरू हो जाता है। जिसे मालूम करके कुर्ब व जवार के मुर्दे ज़बाने हाल में उसे आवाज़ देते हैं। और कहते हैं कि ऐ पीछे आने वाले! तू तो हम से पीछे था। और हम तुझ से पहले आऐ थे, अफ़सोस तूने हमारी मौत से इबरत क्यों न हासिल की और तूने यह न जाना कि जब हम इस आलम में आए तो हमारे आमाल ख़त्म हो गए। यानी यहाँ आकर हम कुछ न कर सके। ऐ शख़्स तूने मोहलत पाई तो उस हालत में तुझे मुनासिब था कि जो कुछ कि भलाइयाँ हम से रह गईं थीं तू वह सब पूरी करके आता। मासिवाए उस के ज़मीन के तमाम गोशे निदा करते हैं कि ऐ दुनिया के फ़रीफ़्ता! तूने अपने से पहले मरने वालों को देखकर क्यों न इबरत हासिल की ? अफ़सोस तेरी हालत पर कि तू भी दुनिया का वैसा ही आशिक़ रहा जैसे कि तुझ से पहले लोग दुनिया के आशिक़ रहे थे।

नज़म

काश फ़िस्क़ व फुजूर छोड़ें हम   और मआसी से मुँह को मोड़ें हम
रिश्तए मासियत को तोड़ें हम   काश मौला से रब्त जोड़ें हम

काश उक़बा की लौ लगे हम को
काश दुनिया से हम को नफ़रत हो

नीज़ हदीस में आया है कि जब नेक बंदे को क़ब्र में रखते हैं तो उस के नेक आमाल उसे चारों तरफ़ से आकर घेर लेते हैं। चुनान्चे अज़ाब के फ़रिश्ते जब उस के पावँ की तरफ़ से आते हैं तो मरने वाले की नमाज़ सामने आ खड़ी होती है और अज़ाब के फ़रिश्तों से कहती है कि तुम इस को अज़ाब में मुब्तला नहीं कर सकते हो! इस लिए कि अल्लाह तआला के सामने यह शख़्स नमाज़ में बहुत खड़ा रहा है। यह सुनकर अज़ाब के फ़रिश्ते वहाँ से हट जाते हैं और मरने वाले के सर की जानिब आते हैं। उसी वक़्त उस के रोज़े हाइल होते हैं और अज़ाब के फ़रिशतों से कहते हैं कि तुम इस पर आज़ाब नहीं कर सकते हो! इस लिए कि इस ने अल्लाह के लिए भूक प्यास की बड़ी बड़ी तकलीफ़ें उठाई हैं। यह सुनकर अज़ाब के फ़रिश्ते वहाँ से भी सरक जाते हैं। और फिर उस के हाथों की तरफ़ आते हैं। उसी वक़्त मरने वाले की सख़ावत आगे आ जाती है। और अज़ाब के फरिश्तों से कहती है कि इस पर ज़रा भी अज़ाब नहीं कर सकते हो! इस लिए कि इस ने अपनी ज़िन्दगी में बहुत सी ख़ैरात की है और ख़ल्कुल्लाह को बड़े बड़े फ़ायदे पहुंचाए हैं। यह सुनकर अज़ाब के फ़रिश्ते राहत की मुबारकबाद देकर उस क़ब्र से निकल जाते हैं। जब यह निकलते हैं तो उसी वक़्त रहमत के फरिश्ते क़ब्र में आ मौजूद होते हैं और आते ही उस मैयित के नीचे जन्नत का मख़मली फ़र्श बिछाते हैं। और हद्दे निगाह तक उसकी क़ब्र को फ़राख़ कर देते हैं। और बहिश्त की कींदीलें लाकर वहाँ रोशन कर देते हैं ताकि क़यामत तक यह मरने वाला इस रूहानियत के नूर हैं महव व मुस्तग़रिक़ रहे।

नज़्म

क्या अंधेरी क़ब्र रोशन हो गई
नेकियां जिस के लिए की थीं यहाँ
किस अड़ी मुकिश्ल में वे आई हैं काम
खिड़कियाँ दोज़ख की खुल जाएं अभी

कैसी उस पे रहमते बारी हुई
क़ब्र में जाकर हुई वे सब अयाँ
आग की चढ़ने को थी मुँह पर लगाम
वह तो यूँ कहिए कि रहमत हो गई

नेकियां बंदे के आगे आ गई
उस पे बस चारों तरफ़ से छा गई

सवालात मुन्किर नकीर

कीमियाए सआदत में हज़रत इमाम ग़ज़ाली लिखते हैं कि रसूलुल्लाहﷺ ने फ़रमाया जब मुर्दा क़ब्र में दफ़न होता है तो दो फ़रिश्ते सियाह मुँह और नीली आँखों वाले वहाँ आ मौजूद होते हैं। जिन में एक का नाम मुन्किर और दूसरे का नाम नकीर है। और आते ही वह साहिबे क़ब्र से बिजली की कड़क जैसी आवाज़ से पूछते हैं مَا رَبُّكَ तेरा रब कौन है ? مَا دِيْنُكَ तेरा दीन क्या है ? مَنْ هٰذَا الَّذِيْ بُعِثَ فِيْكُمْ वह कौन थे जिन्होंने तुझे दीन सिखाया ? पस मुर्दा अगर बाईमान है तो जवाब देता है मेरा रब्ब अल्लाह, मेरा दीन इस्लाम, यही मेरे नबी मुहम्मदﷺ हैं। यह जवाब सुनते ही फ़रिश्ते उसकी क़ब्र सत्तर गज़ लम्बी चौड़ी बना देते हैं नीज़ रोशनी और नूर से उसकी क़ब्र मुनव्वर हो जाती है। फिर फ़शिते कहते हैं कि अब तू सुख की नीन्द सो, अब तुझे वही जगाएगा जो तेरा सच्चा दोस्त और दोनों जहान का हक़ीक़ी वारिस है। और जो मुर्दा मुनाफ़िक़ है तो मुन्किर नकीर के जवाब में कहता है कि मैं कुछ नहीं जानता अलबत्ता लोगों से सुनता था कि वह उन की निसबत कुछ कहा करते थे। वही मैं भी कहता हूँ। उसी वक़्त ज़मीन को हुक्म मिलता है कि सिमट कर मिल जा! ज़मीन ऐसी सिमटती है कि उस मरने वाले की तमाम हड्डियाँ और पसलियाँ इधर से उधर और उधर से इधर निकल जाती हैं। और उसकी हड्डियाँ टूटने की आवाज़ तमाम वुहूश व तय्यूर सुनते हैं। और इसी तरह क़यामत तक अज़ाब में मुब्तला रहता है। एक रोज़ हज़रत सरवरे आलमﷺ ने हज़रत उमर रज़ि॰ से दर्याफ़्त किया ऐ उमर रज़ि॰ मरने के बाद तुम अपनी निसबत क्या खयाल रखते हो ? जबकि लोग तुम्हारे लिए चार गज़ लम्बी और सवा गज़ चौड़ी क़ब्र खोदें और फिर तुम्हें गुस्ल देकर कफ़नाएं और ले जाकर क़ब्र में रखदें और तुम पर मिट्टी डाल कर चले आएं और फिर क़ब के फ़रिशते यानी मुन्किर नकीर राअद की तरह गरजते और बिजली की तरह अपनी आँखें चमकाते और अपने हैबतनाक बाल ज़मीन पर लटकाते और अपने दोनों दांतों से तुम्हारी क़ब्र की मिटटी हटाते हुए आएं और तुम्हें आकर वे झिंझोड़ें। यह सुनकर हज़रत उमर रज़ि॰ ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाहﷺ आप यह फ़रमाएं

कि क्या इस वक़्त मेरी अक़्ल और पूरे होश व हवास मेरे साथ होंगे ? फ़रमाया हां. हज़रत उमर ने अर्ज़ किया बस तो फिर मुझे कुछ खौफ़ नहीं मैं इन्शाअल्लाह मुन्किर नकीर को अच्छी तरह जवाब दे लूंगा।

हुज़ूर ﷺ ने फ़रमाया! लोगों! आख़िरत की सब से पहली मंज़िल क़ब्र है अगर उस में आसानी से गुज़र गई तो उसके आगे जो कुछ होने वाला है उस में भी आसानी होगी और अगर क़ब्र में दुश्वारी हुई तो जो उस के आगे होने वाला है उस में भी दुश्वारी होगी। उसके बाद हज़रत इमाम ग़ज़ाली लिखते हैं कि लोगो! जो हौलें और हैबतें आगे को पेश आने वाली हैं उनमें सब से पहले तो नफ़ख़े सूर की हैबत है। फिर क़यामत की हौल है फिर उसकी दराज़ी की दहशत है और फिर उसकी गर्मी और तपिश और उसके पसीने का खौफ़ है और फ़िर गुनाहों की पुरशिश का ख़याल है और नामए आमाल दाएं या बाएं हाथ में आने का डर है। और फिर वहाँ की रुसवाई का हौल है। और फ़िर मीज़ाने अदालत की दहशत है कि देखिये गुनाह भारी होते हैं या नेकियां। और फ़िर दुश्मानों के मुतालबात और उनकी जवाब दही का अंदेशा। और फिर पुल सिरात से गुज़रने की दहशत है और फिर दोज़ख और उसके फ़रिश्तों की हैबत और वहाँ के सांप बिच्छू और तौक़ व ज़ंजीर और ज़क़्क़ूम का ख़ौफ़ है।

नज़्म

पहली सीढ़ी पर सवालाते कुबूर — सहल फ़रमाए जिन्हें रब्बे ग़फ़ूर
कामयाबी उस में जिस को हो गई — उसको फिर उक़बा में का है की कमी
और जो कोई कि इन में रह गया — उस पे बस फिर हश्र बरपा हो गया
रख हमें साबित क़दम ऐ किबरिया — क़ब्र में घबरा न जाएं हम ज़रा
ए खुदा आसान कर आसान कर — फ़ज़्ल अपना हम पे ऐ रहमान कर
एक तेरे प्यारे के हैं हम उम्मती — लाज रखियो उसकी मौलाए ग़नी
आजिज़ व लाचार हैं मजबूर हैं — और जिहालत के सबब माज़ूर हैं
शौक़ दे और ज़ौक़ दे तू इल्म का — अपनी मर्ज़ी का हमें रस्ता बता

ऐ खुदा आसान कर आसान कर
फ़ज़्ल अपना हम पे ऐ रहमान कर

मौत का इलाज

मौत का इलाज इस के सिवा और कुछ नहीं हो सकता है कि बस इन्सान हर वक़्त उस के लिए तैयार रहे। इसी में इन्सान की बेहतरी है और इसी में उसकी ख़ैरियत है। क्योंकि जो लोग इस के लिए तैयार नहीं हैं वह दुनिया जहान की बुराइयां अपने सर लेने और जहान भर की ख़राबियां अपने पल्ले में बांधने में मसरूफ़ हैं।

दोस्तों! दुनिया जहान के जराइम और मज़ालिम सिर्फ़ मौत से ग़ाफ़िल होने का नतीजा नीज़ तमाम अख़लाक़ी कमज़ोरियां और खुद ग़र्ज़ियां महज़ मौत को दिल से भुला देने का नाम है आज जिस शख़्स को अपने मरने का पूरा पूरा ज़ाइचा मालूम है और नहलाने के लिए तख़ता पर लिटाने का अच्छी तरह इल्म है। और वह उस यक़ीनी और ज़रूरी पेश आने वाले हसरत भरे वक़्त को दिन भर में कम अज़ कम एक दो मर्तबा ज़रूर अपने दिल में जगह दे लेता है तो मुमकिन नहीं वह किसी यतीम का माल मार सके, मजाल नहीं कि वह किसी की दिल आज़ारी कर सके। क्योंकि जिसे क़त्ल का हुक्म मिल चुका है वह क़ैद खाने से मैदाने क़िसास तक के मुख़तसर से रास्ते में हरगिज़ चैन नहीं लेगा और ख़र्राटे लेने के लिए सोने की तैयारी नहीं करेगा। बल्कि महज़ ख़ामोशी और सुकून के साथ गोया बेजान यहाँ से वहाँ तक का रास्ता तै करेगा। जिस के लिए मैं अपनी तक़रीर में मौलाना इमाम ग़ज़ाली की तहरीर को निहायत ज़ोर के साथ तरजीह देता हूँ जिस से आप को यह मालूम होगा कि उनको कामिल इन्सान बनाने के लिए सब से उमदा इलाज क्या है। सुनिए!

हज़रत इमाम ग़ज़ाली फरमाते हैं जानना चाहिए कि मौत एक बड़ा अहम और ज़रूरी काम है जिस का ख़तरा भी दहशत से खाली नहीं, मगर लोग हैं कि उस से ग़ाफ़िल हैं कभी कभी उसे याद कर लेते हैं तो इस का उनके दिलों पर मुतलक असर नहीं पड़ता। जिस की बड़ी वजह यह है कि उन का दिल दुनिया के मशग़िल में इस क़दर डूबा हुआ है कि अब किसी चीज़ की उनके दिलों में गुंजाइश ही बाक़ी नहीं रही है। यही सबब है कि वह दुनिया

की बातों में मसरूर और उक़बा के नाम से नुफूर करने लगते हैं पस इसका उमदा इलाज यह है कि इन्सान थोड़ी देर ख़िलवत या तन्हाई में बैठा करे और एक साअत के लिए दुनिया के तमाम अफ़कार को अपने दिल से इस तरह भुला दिया करे जैसे कोई शख़्स एक निहायत खतरनाक जंगल तै करना चाहता है और उसकी तदबीरों में हमा तन ग़र्क़ आब हो कर हर तरफ से अपने दिल को खाली कर लेता है।

इसी तरह आदमी को चाहिए कि गोशे में बैठ कर अपने दिल में सोचे कि ऐ गाफ़िल! मौत क़रीब आ पहुंची है। और शायद आज ही तुझे मलिकुलमौत से साबिक़ा आ पड़े और तुझे एक ऐसे अंधेरे तह ख़ाने में जाने का हुक्म हो जहाँ का हाल तुझे मालूम न हो कि इस में कुँवा है या पत्थर भरे हुए हैं उस में जाने का तो कभी हौसला न कर सकेगा। नीज़ अपने ज़माना के उन लोगों को याद करे जो उसकी देखती आँखों क़ब्र में जा सोए हैं। उन की सूरतें और शक्लें ज़हन नशीं करके सोचे कि दुनिया में कैसी शान व शौकत से रहा करते थे गोया मौत कभी न आएगी। मगर अफ़सोस उनकी इसी गफ़लत और आख़िरत की इसी बे सरो सामानी की हालत में मौत ने उन्हें आ दबोचा और तिनके की तरह उन्हें तोड़ कर ले गई और अब उनकी क़ब्र में क्या सूरत हो गई होगी। आज़ा आज़ा अलग अलग हो कर मिट्टी हो गए होंगे।

उन का गोश्त पोस्त, उनकी आँखें और ज़बान क़ब्र के कीड़े खा गए होंगे, अफ़सोस उनकी हालत क़ब्र में क्या कुछ न हुई होगी मगर उन के वारिसों ने उन का माल आपस में तक़सीम किया। जिस को मज़े से खाते और रात दिन चैन उड़ाते हैं। उन की औरतें दूसरे ख़ानदानों में ऐश व इशरत मना रही हैं। नीज़ उन की औरतें और उनकी औलाद कभी उन्हें याद भी नहीं करतीं। इसी तरह अपने ज़माने के एक एक आदमी को याद कर ले और उनकी सैर व तफ़रीह और उनकी हंसी दिल लगी। और उनकी गफ़लत व मशगूली का खयाल करे कि दुनिया के कामों में कैसी कैसी तदबीरें किया करते थे, और बीसों साल का आज ही से इंतिज़ाम व बन्दोबस्त कर लिया

करते थे कि मुबादा इतने साल के बाद कोई ज़रूरत आन पड़ी तो क्या करेंगे अफ़सोस वह उन तदबीरों में बड़ी बड़ी तकलीफें उठाते थे। हालांकि उन का कफन बाज़ार में फ़रोख़्त होने के लिए आ गया था। मगर वह अपनी तदबीरों में ही मसरूफ़ थे। और उन्हें कुछ ख़बरें नहीं थी कि कल क्या होने वाला है!

पस ऐ इनसान! तू अपने दिल में यह सोच कि तू भी इन्हीं जैसा है और तेरी ग़फ़लत और तेरी हिर्स व हिमाक़त भी उन्हीं जैसी है। मगर तू इस बात को ग़नीमत समझ कि तुझे यह दौलत मिली कि वह लोग तेरे सामने मौत का निवाला हुए और तेरे सामने से गुज़रे महज़ इस लिए कि तू उन से इबरत हासिल करे। فَاِنَّ السَّعِيْدَ مَنْ وُّعِظَ بِغَيْرِهٖ यानी नेक बख़्त वही है जो दूसरे का हाल देख कर ख़ुद नसीहत पकड़े।

कितना उमदह इलाज फ़रमाया कैसा अच्छा तरीक़ा बतलाया
आप और मैं अगर चलें उस पर कैसे आबाद हुएं दोनों घर
साथ दुनिया के दीन ले निकलें दोनों आलम में शाद शाद रहें
मौत आख़िर ज़रूर आती है जान अपनी ज़रूर जाती है
क्यों न फिर रोज़ उसको याद करें क्यों न उक़बा के दोस्तवार बनें

लाचारी व बेबसी

हज़रत हसन बसरी रह॰ निहायत अमीर कबीर थे और आप जवाहरात की तिजारत किया करते थे, एक मर्तबा मुल्के रूम जाने का इत्तिफ़ाक़ हुआ और वहाँ के वज़ीर आज़म से मुलाक़ात हुई असनाए गुफतगु वज़ीरे रूम ने हज़रत हसन रह॰ से कहा कि आज हम को एक जगह चलना है आप हमारे साथ चलिए! यह कह कर उसने हुक्म दिया कि एक घोड़ा निहायत आरासता करके हसन रह॰ के वास्ते लाया जाएगा। चुनान्चे घोड़ा आप के लिए हाज़िर किया गया।

वज़ीरे आज़म और हज़रत हसन रह॰ घोड़ों पर सवार हो कर एक जंगल में पहुंचे हज़रत हसन रह॰ देखते हैं कि जंगल में एक मक़ाम पर निहायत पुर तकल्लुफ व आलीशान मखमली खेमा इसतादह है। जिस की तनाबें रेशम और

ज़री की हैं और मेखें सोने चान्दी की। हज़रत फ़रमाते हैं कि फिर मैंने देखा कि एक अज़ीमुश्शान फौज तमाम सामाने जंग से मुसल्लह हरकत करती हुई दिखाई दी। और उस शाही ख़ेमे के मुत्तसिल पहुंचकर उसके चारों तरफ चक्कर लगाया। फिर मैंने सुना कि उस के बड़े बड़े जरनैलों ने उस खेमें की तरफ खिताब करके कुछ कहा और फिर वहाँ से मय फ़ौज के चल दिये।

इसके बाद चन्द मुअज़्ज़ज व पुरशौकत बूढ़ों को मैंने दुखा कि उनकी जमाअत उस ख़ेमे के क़रीब आई और उसके चारों तरफ फिरी जिस में चन्द ने खड़े हो कर उस ख़ेमे से ख़िताब करके कुछ कहा और वह भी चले गए।

इस के बाद चार सौ के क़रीब हुकमा, वुज़रा, मुदब्बिरीन उस ख़ेमे की तरफ़ आए अैर गिर्दा गिर्द चक्कर लगाया और उसी तरह खड़े होकर उन्होंने भी कुछ कहा और कह कर चले गए।

इसके बाद मैंने देखा कि दो सौ कनीज़ों की जमाअत जिन का हुस्न व जमाल जिन का लिबास व सामान बे हद् व हिसाब था नीज़ उनके हाथों में ज़र व जवाहरात से लबरेज़ एक एक थाल था। यह भी इस खेमे के पास आईं और उसके चारों तरफ़ फिरीं। और खड़े होकर कुछ कहा और चली गईं।

इसके बाद मैंने देखा कि खुद बादशाह और वह मेरा मेज़बान वज़ीरे आज़म उस ख़ेमे में दाख़िल हुए और थोड़ी देर कुछ वहाँ कहते रहे उसके बाद वे भी बाहर चले आऐ।

हज़रत हसन बसरी कहते हैं कि मैं हैरान हूँ और मेरी अक़्ल दंग है कि इलाहलआलमीन! यह क्या माजरा है। आखिर इस खेमे में कोई शहन्शाह या बादशाह उतरा हुआ है ? यह क्या बात है ? जब वज़ीर से मिला तो उन से दर्याफ़्त किया कि यह क्या हैरत अंगेज़ वाक़िआ था ? वज़ीर ने कहा कि ऐ हसन! क्या पूछते हो ? हमारे बादशाह का एक साहब हुस्न व जमाल, हर नौअ इल्म में कामिल व यकता फ़रज़न्द था नीज़ फ़न्ने जंग और बहादुरी में बे मिस्ल व लासानी वही एक लड़का था, बाप हज़ार जान से उस पर आशिक़ व शैदा बना हुआ था। इत्तिफ़ाक़ से वह बीमार हुआ जिस के इलाज में

बादशाह ने कोई कसर बाकी नहीं रखी और बड़े बड़े तबीब व हाज़िक उस के मुआलिजे में नाकाम व आजिज़ हुए आखिर उस का इन्तक़ाल हो गया। ऐ हसन! वह नौ जवान शहज़ादा उस खेमे में दफ़न है। हर साल एक मर्तबा उस के मज़ार की ज़ियारत को इस शान से लोग आते हैं जिन को तुम ने देखा।

सब से पहले वह अज़ीमुश्शान फ़ौज जो तुम ने देखी हर साल इसी तरह खेमे के गिर्द फिरती है और फिर खड़े हो कर कहती है कि ऐ हमारे शहज़ादे यह हालत कि जो तुझे पेश आई है। वह अगर जंग व जिदाल से रफ़अ हो सकती तो हम सब अपनी जानें तुझ पर कुर्बान व निसार करते और तुझ को बचा लेते। लेकिन हम देखते हैं कि तू ऐसे के क़ब्ज़े में आ गया है जिस से हम किसी क़िस्म का जिदाल तो दरकिनार उसका वहम व ख़्याल भी दिल में नहीं ला सकते। यह कह कर वह फौज मायूस होकर पलट जाती है।

इसके बाद चन्द मुअज़्ज़ज व पुरशौकत बूढ़े जो तुमने देखे वह उलामा व ज़हहाद की जमाअत है वे आए और खड़े होकर उन्होंने कहा कि ऐ शहज़ादे अगर हम शफ़ाअत और तज़र्रोअ व ज़ारी से तेरी बला दफ़ा कर सकते तो आज हम शफ़ाअत और तज़र्रोअ व ज़ारी में कोई कसर बाक़ी न छोड़ते। लेकिन हम देखते हैं कि तू ऐसे के कब्ज़े में है जो अपनी क़ज़ा व क़द्र जारी करने के बाद फिर किसी की नहीं सुनता ऐ शहज़ादे! हम मजबूर हैं यह कहकर वे भी वापस होते हैं।

इसके बाद हुकमा व वुज़रा व मुदब्बिरीन की जमाअत जो तुम ने देखी वे आते हैं और कहते हैं कि ऐ शहज़ादे। अगर हम दानिशमंदी व हिकमत और फ़लसफ़ों से तुझे रिहाई दिला सकते तो आज किसी हिकमत व दानिशमंदी को उठा नहीं रखते और ज़रूर तुझे रिहा कराते मगर हम देखते हैं कि तू ऐसे के पास पहुंच चुका है जिस से वापस लेना आज तक किसी के वहम व गुमान तक में भी नहीं आया। शहज़ादे हम मजबूर हैं यह कहकर वापस होते हैं।

इसके बाद दो सौ कनीजें जिन के हुस्न व जमाल और लिबास व

सामान तुम ने देखे खेमे के मुत्तसिल आती हैं और कहती हैं कि ऐ शहज़ादे अगर तू हुस्न व जमाल और लिबास और सामान व जवाहरात पेश करने से मिल सकता तो आज हम कनीज़ें सब कुछ निसार कर देतीं और तुझ को छुड़ा लेतीं। मगर ऐ शहज़ादे! तुझ को ऐसे ज़बरदस्त ने बुला लिया है कि जो दुनिया की किसी शै को पसंद नहीं करते हम तो मजबूर हैं यह कह कर चली जाती हैं।

इसके बाद खुद बादशाह मय वज़ीर के इस खेमे में जाता है और कहता है कि ऐ फ़र्ज़न्द! ऐ जाने पिदर! आज तेरे बाप ने जो परवरदिगार का एक नाचीज़ बन्दा है उस ने अपनी तमाम कुव्वतें पेश कीं ऐ जाने पिदर! तेरे छुड़ाने के लिए निहायत अजीमुश्शान फ़ौज लाया। ऐ फ़र्ज़न्द! तेरे लिए हुस्न व जमाल वाली औरतें और ज़र व जवाहर लेकर आया। अगर उन तदबीरों से ऐ फ़र्ज़न्द तू मुझ से आन मिलता तो मुमकिन था कि मैं सब कुछ आज तेरे लिए निसार कर देता। नीज़ जितनी मुझ में ताक़त थी सब सर्फ़ करता है तुझे अपने साथ लेकर चलता कि तेरी शह नशीं और तेरे बैठने की जगह तेरे बग़ैर ख़ाली पड़ी हैं तुझे ले जाकर वहाँ बैठाता लेकिन मै जानता हूँ कि तू ऐसे अज़ीमुश्शान और ज़बरदस्त के क़ब्ज़े में है कि जिस से कोई छुड़ा नहीं सकता। ऐ फ़र्जन्द! मैं निहायत अफ़सोस के साथ मजबूर हूँ और निहायत नाउम्मीदी के साथ लाचार हूँ। ऐ फ़र्ज़न्द! अब दूसरे बरस तक के लिए तुझ पर सलाम पेश करता हूँ। فَاللهُ خَيْرٌ حَافِظًا कह कर रुख़सत होता है।

जब वज़ीर ने अपनी यह तक़रीर खत्म की तो हज़रत हसन बसरी के दिल पर कुछ ऐसा असर हुआ कि जुमला उमूरे दुनियावी से बेकार हो गए। और इसी फिक्र में मसरूफ हुए कि आखिरत का ज़ादे राह तैयार करें. चुनान्चे इसी हालत में बसरे अपने मकान पर पहुंचे और तमाम माल व दौलत राहे खुदा में मसाकीन व मुहताजों को लुटा दिया। और क़सम खाई कि आइंदा इन उमूरे दुनिया में जो बावजूद बस में होने के अंजाम कार निहायत बे बसी व लाचारी दिखाते हैं कभी नहीं पडूंगा। और मरते दम तक इन्हें दिल न दूँगा। चुनान्चे बकिया उमर अपने उन दीनी मशागिल में गुज़ारी कि आज

हज़रत हसन बसरी सरताज औलिया व उलामा मशहूर हैं और तमाम इल्मे वलायात के सिलसिले आप ही से चलते हैं।

आप की मुख्तसर सवानेह उमरी यह है कि जब आप पैदा हुए तो खलीफा हज़रत उमर फारूक आज़म का दौर था। लोग आप को हज़रत उमर फारूक आज़म की खिदमत में लाए जिन्हें देख कर अमीरुलमोमिनीन ने फरमाया कि سَمُّوْهُ حَسَنًا فَاِنَّهُ حَسَنُ الْوَجْهِ यानी इसका नाम हसन रखना चाहिए क्योंकि यह खूबसूरत है। हज़रत उम्मे सलमा उन की परवरिश और किफालत करती थीं और उसी शफ़क़त और मुहब्बत के सबब उन के दूध उतर आया था। आप हमेशा फरमाया करती थीं। खुदावंदा! तू इसको हादीए दीन व पेशवाए खल्क़ कीजिओ! चुनान्चे ऐसा ही हुआ। आप ने होशियार हो कर एक सौ तीस सहाबा से मुलाक़ात की जिन में सत्तर असहाबे बद्र थे और आप हज़रत इमाम हसन के शागिर्द और मुरीद हुए।

नज़म

बे बसी लाचारगी व आजिज़ी
मौत से हारा है आकर आदमी
शाहे हफ्त अकलीम है वह भी फना
है गदा वह भी है तो वह खाक का
उसके आगे अंबिया माजूर हैं
उसके आगे औलिया मजबूर हैं
इससे फिर गफ़लत है क्यों इन्सान को
क्यों वह भूले अपने उस रहमान को
बाद मुर्दन जिस से होगा साबिक़ा
सब से छुट कर जिस से होगा वास्ता
वास्ता पैदा करो उस से यहीं
वास्ते अल्लाह के ऐ हम नशीं
है इसी में बेहतरी अंजाम की
है समझदारी इसी में ऐ अखी
अपना मुसतक़बिल सवांरें काश हम
हों न गाफिल उस खुदा से एक दम
साबिक़ा जिस से रहेगा बस मुदाम
उसकी खुशनूदी का हो बस एहतेमाम
अक्ल के मायना यही हैं दोस्तों
अपने मुसतक़बिल को तुम रौशन करो

हज़रत इब्राहीम का हाल और विसाल

जनाब हज़रत इब्राहीम अपनी जान और माल और औलाद राहे खुदा में कुर्बान कर देने के इम्तिहान में पूरे साबित क़दम उतरे तो अल्लाह तआला ने उन्हें एज़ाज़े दुनियावी और सरवते मालदारी से मुज़ैयन व माला माल फरमाया

और बैतुलमक़दिस के पास मक़ाम खलील एक बड़ा शहर आप को अता फ़रमाया तो अब हज़रत इब्राहीम॰ यह इमलाक खुदावंदी लेकर उसके बंदों की खिदमत में मसरूफ हुए। और सब से पहले उन को अहकामे शरीअत बताए और सिखाए और अल्लाह की इबादतों पर उन्हें लगाया। और इन बातों से उन्हें जन्नत का रास्ता बताया। और उसकी नाफ़रमानियों पर दोज़ख के अज़ाब से डराया। यह खिदमात अपने ऊपर लाज़िम करते हुए एक यह खिदमत भी आप ने अपने ज़िम्मे ले ली कि रोज़ाना अपने मवेशियों का दूध और घी निकलवाते और मैदह उस से गुन्धवाते और निहायत नफ़ीस बाक़र खानियां पकवाते और शाम को सरे राह जा बैठते। वहाँ जितने मुसाफ़िर और मिसकीन ग़रीब आते उन सब को लेकर मकान पर आते और निहायत मदारात से उन्हें खिलाते पिलाते।

एक रोज़ ऐसा इत्तिफ़ाक़ हुआ कि आप शाम के वक़्त जंगल में सरे राह बैठे हैं मगर कोई मुसाफ़िर नहीं आया। जिन की राह देखते देखते आप को रात ज़्यादा आ गई। आप ने दुआ की कि खुदावंदा भेज किसी अपने बन्दें को आपने दुआ की ही थी कि एक बूढ़ा ज़ईफ़ लकड़ी टेकता हुआ आहिस्ता आहिस्ता चल कर आया। और कोई नहीं आया।

जनाब खलीलुल्लाह॰ उसी बूढ़े को ग़नीमत समझ कर मकान पर लाए और अल्लाह की नेमतें उसके सामने रखीं। जब उस ज़ईफ़ ने खाना शुरू किया तो हज़रत इब्राहीम॰ ने उस से यह दर्याफ़्त किया مَنْ تَعْبُدُ यानी किस की इबादत करते हो? इतना सुनते ही उस बूढ़े मुसाफ़िर ने दस्तर ख़ान से अपना हाथ खींच लिया और वह बुरा मान कर खड़ा हो गया और अपने दिल में कहा कि यह खिला कर ज़ात पूछते हैं ? और फिर वह सीधा निकला हुआ चला गया। इधर वह बूढ़ा मकान से निकल कर गया उधर जिब्रईल॰ अलैहि॰ सिदरतुलमुन्तहा से आप के पास आए। और कहा कि अल्लाह तआला आप से दर्याफ़्त फ़रमाता है कि अपने बन्दों के हम रोज़ी रसाँ हैं या तुम हो ? فَبِعِزَّتِي أَنَا وَ جَلَالِي وَ كَرَمِي यानी:

नज़म

मुझ को अपनी शाने आली की क़सम
और मुझे शाने जलाली की क़सम
दो जहाँ की परवरिश करता हूँ मैं
और सब को नेमते देता हूँ मैं
एक से भी यह नहीं करता सवाल
तेरा मज़हब क्या है और क्या तेरा हाल
कान देने से हमेशा है मुझे
मज़हब व मिल्लत वह बस कुछ भी रखे
हम ने उस बूढ़े को पाला आज तक
और दीन उसका न पूछा आज तक
पूछ कर इन रिज़्क़ देते ऐ खलील
मेरे बन्दे इस से हो जाते ज़लील
तुम ने खाने पर क्या क्यों यह सवाल
मेरे बन्दे को हुआ इस से मलाल
लाओ बस उसको मना कर जूद तर
और मआफ़ी मांगो उसे से दौड़कर

वरना मैं तुम से खफ़ा हो जाऊंगा
मेरा बन्दा गर रहा तुम से ख़फ़ा

अल्लाह अल्लाह यह हुक्म इताब आमेज़ सुनकर हज़रत इब्राहीम दौड़े हुए उस जईफ़ को मनाने गए। जो दूर निकर चुका था। उस से जाकर तमाम किस्सा हुज़ूर रब्बुल इज़्ज़त के नाराज़ होने का बयान फरमाते हुए कहा कि ऐ जईफ़! अल्लाह के लिए मुझे मआफ़ी दे कि मैंने ऐसे वक़्त तुझ से सवाल क्यों किया जब कि तू रिज़्क़े खुदावंदी से मुमताज़ हो रहा था नीज़ आप ने यह भी फ़रमाया कि अल्लाह वहदहू ला शरीक ने यह भी इरशाद फ़रमाया है कि मैंने उस बूढ़े बंदे से आज तक भी उसका मज़हब नहीं दर्याफ़्त किया और इसी तरह अपनी हमा नेमतें उसे देता रह। बूढ़ा यह बातें सुन कर ज़ार व क़तार रोने लगा। और कहा–

नज़म

इस क़द्र वह मेहरबाँ बन्दों पे है
हैफ हम पर जो भुला लें हम उसे
मैं हुआ क़ुर्बान उस के नाम पर
जिस को मेरा दर्द है इस इस क़द्र
जो हुआ मेरे लिए तुम पर खफ़ा
क्यों न मैं क़ुर्बान हूँ उस पर भला
क्यों न उस का दीन कर लूँ इख़्तियार
जबकि वह करता है मुझ को इतना प्यार

लाइलाहा कह मुसलमां हो गया
बुत परस्ती में जो था अब तक पड़ा

विसाले इब्राहीम खलीलुल्लाह

اَلْبَقَاءُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعَالَمِیْنَ

कुतुबे तवारीख़ व तफ़ासीर में लिखा है कि जब इब्राहीम ख़लीलुल्लाह की उमर एक सौ अस्सी बरस की हो गई तो एक रोज़ आप ने बारगाहे इलाही में अर्ज़ किया कि खुदावंदा! मेरी मौत उस वक़्त आए कि जब मैं खुद मौत की तमन्ना करूं, या अपने मुहँ से दुआ मांगूँ! वहाँ से मंजूरी हो गई कि अच्छा ऐ खलील ! जब तुम खुद तमन्ना करोगे जब ही हम तम्हें अपने पास बुलाएंगे। चुनान्चे एक रोज़ मलकुलमौत आपकी मजलिस में तशरीफ लाए मगर इस सूरत में कि बिल्कुल शेख़े फ़ानी हैं। न होश है न हवास है हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह ने बमोजिब अपनी आदते मेहमान नवाज़ी के खाना उस ज़ईफ़ के सामने लाकर रखा। ज़ईफ़ अपने थर थराते और कपकपाते हाथ से निवाला उठाता हैं और अपने मक़ाम की तरफ़ ले जाता है और कभी अपनी नाक में निवाला देना चाहता है कभी माथे की तरफ़ बढ़ाता है। आप उस ज़ईफ़ की यह हालत देखकर फ़रमाते हैं कि ऐ मर्दे ज़ईफ़! यह तेरा क्या हाल है ? निवाला मुहँ में लिया करते हैं या कान व नाक में ? ज़ईफ़ ने जवाब में कहा कि यह बुढ़ापे का सबब है !

आप ने पूछा कि ऐ ज़ईफ़! तेरी कितनी उमर हो गई ? ज़ईफ़ ने आप की उमर से सिर्फ़ दो साल ज़ायद बताए।

यह सुनकर आप ने उस से कहा कि दो साल में मैं भी तुझ जैसा ही हो जाऊंगा। ज़ईफ ने कहा कि हज़रत! दो साल तो बहुत होते हैं वह चाहे तो इन्सान के होश व हवास एक पल में ले सकता है। बस यह सुनते ही हज़रत इब्राहीम डर गए। और उस वक़्त जनाब ने दोनों हाथ आसमान की तरफ़ उठाए और मौलाए करीम की जनाब में अर्ज़ किया कि ऐ इलाहुलआलमीन! मुझे चलते हाथ पावँ अभी उठा ले तो बेहतर है वरना दो साल बाद मैं भी ऐसा ही हो जाऊंगा पस आप का यह कहना था कि मलकुलमौत अपनी

असली सूरत बदल कर कहते हैं:

नज़्म

चलिए मौला ने बुलाया है तुम्हें
चलिए आक़ा ने बुलाया है तुम्हें
हो गए राज़ी वहीं प्यारे ख़लील
वास्ते दीदार मौलाए जलील
आन पहुंची मौत की साअत वहीं
और क्या इसहाक़ को बस जानशीं
खुद वहीं लब्बैक फ़रमाते हुए
बस ख़लीलुल्लाह रुख़्सत हो गए

सब को चलना है वहाँ ऐ दोस्तो
हो पैग़म्बर या वली या कोई हो

(नोट) : यही वह इब्राहीम खलीलुल्लाह हैं जिन के लिए नमरूद की आग गुले गुलज़ार हुई। यही वह ज़ाते अक़्दस हैं जिन के लिए जन्नत का दुम्बा क़ुर्बान करने के लिए आया। यही वह प्यारे पैग़म्बर हैं जिन्होंने हज्जे बैतुल्लाह के लिए खानए काबा बनाया यही वह चहीते नबी हैं जिन के सदके ईदुलअज़हा मुसलमानों को दी यही वह बरगुज़ीदह हसती हैं जिन को बरोज़ क़यामत सब से पहले लिबास पहनाया जाएगा।

विसाले हज़रत याकूब

जब हज़रत याकूब को मिस्र में तशरीफ़ लाए हुए कई साल गुज़र गए जहाँ रात दिन आठों पहर चौंसठ घड़ी हज़रत याकूब अपने इबादत खाने में यादे इलाही करते हैं। एक रोज़ ख़्वाब में आप ने क्या देखा कि आप के वालिद माजिद हज़रत इसहाक़ नबीउल्लाह और आप के जद्दे अमजद हज़रत इब्राहीम खलीलुल्लाह तशरीफ़ लाए और फरमाया याकूब हम से मिलने को दिल नहीं चाहता ? चुनान्चे उसी वक़्त आपकी आँख खुल गई और उठ बैठे और फिर सुबह को अपने नूरे ऐन यूसुफ़ को बुला कर ख़्वाब का ज़िक्र किया।

हज़रत यूसुफ़ ख़्वाब की ताबीर देने में खास कमाल रखते थे समझ गए कि विसाले याकूबी करीब आ गया। मगर कोई ताबीर नहीं बताई खामोश रहे

गो दिल में हज़रत यूसुफ़ को बेहद सदमा हुआ। और इन्तिकाले याकूबी का ख़्वाब सुन कर रोते हुए वहाँ से खड़े हो गए इसके कितने ही रोज बाद एक दिन हज़रत यूसुफ़ के दरे दौलत पर यका यक हज़रत इज़राईल यानी मलकुल मौत आन पुकारे जिनकी आवाज़ से हज़रत याकूब समझ गए कि :

नज़म

मौत का मालिक फ़रिश्ता आ गया
वक़्त अपना दोस्तो आखिर हुआ
वक़्त है आख़िर को यह सब के लिए
गो हज़ारों साल तक कोई जिये
और मअन यूसुफ़ को बुलवाया वहीं
और फरमाया कलामे आखिरी
यूसुफ़ा ! अल्लाह को सोंपा तुझे
तुझ से मौला दो जहाँ में खुश रहे
तुझ को मौला ने अता की बर्तरी
मिल चुका है खिलअ़ते पैग़म्बरी
जानशीं मैंने तुझे अपना किया
और नुबुव्वत का मकाँ तुझ को दिया

है यह पुश्तैनी विरासत यूसुफ़ा
उस के हक़ को हर तरह कीजियो अदा

اَمْ كُنْتُمْ شُهَدَاءَ اِذْ حَضَرَ يَعْقُوْبَ الْمَوْتُ اِذْ قَالَ لِبَنِيْهِ مَا تَعْبُدُوْنَ مِنْۢ بَعْدِیْ قَالُوْا
نَعْبُدُ اِلٰهَكَ وَ اِلٰهَ اٰبَائِكَ اِبْرَاهِيْمَ وَ اِسْمَاعِيْلَ وَ اِسْحٰقَ اِلٰهاً وَّاحِداً

यानी

ऐ हाज़िरीन! क्या तुम उस वक़्त मौजूद थे जब कि याकूब के सामने मौत आ खड़ी हुई और उन्होंने अपने तमाम फ़र्जन्दों को बुला कर पूछा कि ऐ मेरे बच्चो! यह बताओ कि मेरे मरने के बाद तुम किसे पूजोगे और किस की इबादत करोगे ? जिस पर औलादे याकूबी ने जवाब दिया कि आप के माबूद और आप के बाप दादा इब्राहीम और इसमाईल इसहाक़ के माबूद खुदाए वाहिद की इबादत करेंगे और हम उसी के फरमाँबरदार होंगे। जिन के जवाब में हज़रत याकूब ने निहायत खुश होकर फरमाया था फ़र्जन्दो! देखो तुम इसी एतेक़ाद पर जीना और इसी एतेक़ाद पर मरना।

नज़म

मरना जीना हो सब उस के वास्ते फ़र्ज़ यह इन्सान अदा करता रहे
है फ़क़त पूजा उसी की ऐ बशर और डर हो तो फ़क़त मौला का डर

जिस ने भेजा है उसी के वास्ते
आदमी अल्लाह से डरता रहे

इसके बाद हज़रत याकूब ने फ़रामया कि ऐ यूसुफ और यहूद! देखना मेरी मुफ़ारक़त में सब्र करना और मेरी जुदाई में ज़्यादा अंदोहगीं न होना। और मेरे जनाज़े को वहाँ ले जा कर दफ़न करना जहाँ मेरे वालिद इसहाक़ और हज़रत इब्राहीम खलीलुल्लाह मदफून हैं फिर फ़रमाया कि ऐ मेरे अयाल व इतफाल! देखो मिल्लते इब्राहीमी को मज़बूत पकड़ना और अपने आबा व अजदाद के तरीक़े पर चलना। देखो मेरे इन्तिक़ाल के बाद एक ऐसा ज़माना आएगा कि मिस्र का बादशाह खुदाई का दावा करेगा, जिस का नाम फ़िरऔन होगा उसकी न सुनना वह अशद दर्जे का ज़ालिम होगा। उस के मज़ालिम पर सब्र करना और इस्लाम को हाथ से न दे बैठना और फिर वह ज़ालिम बादशाह तुम्हारे ही एक भाई मूसा के हाथों ग़ारत होगा और अंजामे कार हमें फ़तह होगी।

फिर इसके बाद आप हुजूरे खुदावंदी की तरफ़ मुतवज्जह हुए क्योंकि अब सब से वास्ता मुनकतअ करके उस अकेले से मामला पड़ने वाला है। और कहा ऐ मेरे मौला! तेरा लाख लाख शुक्र है कि तू ने मेरी औलाद में से नबी और पैगम्बर मेरी आँखों के सामने बनाए। खुदावंदा! मैं तेरी हम्द व सना करता हूँ और तेरी तसबीह अपनी ज़बान पर जारी करता हूँ और तेरे नाम पर अपनी जान तसद्दुक़ करता हूँ। पस इस फ़िक़रे पर जनाब याकूब की रूह परवाज़ कर गई। اِنَّا لِلّٰہِ وَ اِنَّا اِلَیْہِ رَاجِعُوْنَ

यौमे पैदाइश से आज तक आप को पूरे एक सौ सैंतालीस बरस का ज़माना हुआ यानी आपकी उमर एक सौ सैंतालीस बरस की हुई। पस जनाब का इन्तिक़ाल होते ही जुमला ख़ानदान के आँसू जारी हो गए। और उसी

वक़्त सब के सब आप की तजहीज़ व तकफ़ीन में मसरूफ़ हुए थोड़ी देर में आप का जनाज़ा तैयार हो गया और उसे सैंकड़ों आप के फ़र्ज़न्द और हज़ारहा मुसलमान लेकर चले और मंज़िल बमंज़िल रास्ता तै करते हुए वहाँ लेकर पहुंचे जहाँ हज़रत इसहाक़ और हज़रत इब्राहीम मदफ़ून थे वहाँ पहुंच कर क्या देखते हैं कि हज़रत अैस़ का जनाज़ा भी वहाँ तैयार रखा है हज़रत अैस़ हज़रत याकूब के वह हक़ीक़ी भाई हैं जो अपनी वालिदा के बत्ने मुबारक से जुड़वाँ पैदा हुए थे। जो एक ही दिन पैदा हुए और एक ही दिन दोनों ने इन्तिक़ाल फ़रमाया और फिर बाद नमाज़े जनाज़ा वह एक ही क़ब्र में मदफ़ून हुए और अपनी अपनी जगह दोनों की उमर एक सौ सैंतालीस बरस की हुई। लेकिन आखिर मौत का ज़ायक़ा चखा और इन्तिक़ाल फ़रमा गए।

اِنَّا لِلّٰہِ وَ اِنَّا اِلَیْہِ رَاجِعُوْنَ

नज़म

आह यह मरना भी हम को है ज़रूर
सब को बस जाना है मौला के हुज़ूर
जीने वालों! मौत जिस का नाम है
वह तुम्हारा आख़िरी एक काम है
कोई पैग़म्बर हो या हो बादशाह
आखिरश चलनी है सब को एक राह
ज़िन्दगी यह आर्ज़ी है ऐ फ़ता
कुछ न सोचा तूने ऐ मेहमाँ सरा
है बक़ा मौला फ़क़त तेरे लिए
और फ़ना है मौत है सब के लिए
जीने वाले! तू है मरने के लिए
मरने वाले! क्या अमल तूने किए ?
ज़िन्दगी है पेश खीमा मौत का
है हयात एक आरज़ी व आखिर फना
बेकसी उस वक़्त की देखे कोई
आह ऐ मैयित! यह ख़ामोशी तेरी!
साढ़े तेरह सौ बरस के नूह थे
आखिरश वह भी अदम को चल बसे
ज़िन्दगी है दाइमी बेशक वहाँ
जिस का आता भी नहीं वहमो गुमां

हज़रत सुलैमान का इन्तिक़ाल

आप की वफ़ात के आसार आप पर इस तरह नुमांया हुए कि वह मेहराबे इबादत जिस में आप अकसर ज़िक्रे इलाही किया करते थे यकायक उसमें एक दरख़्त नमूदार हुआ आप ने उस से दर्याफ़्त किया कि ऐ दरख़्त तेरा क्या नाम है जिस ने अपना नाम खरतूब बताया। आप ने फिर उस से पूछा कि

तुझ में क्या खासियत है! वह बोला कि मैं जिस ज़मीन पर पैदा होता हूँ वहाँ के मुल्क व सलतनत पर ज़वाल आता है। फ़ौरन हज़रत सुलैमान समझ गए कि ज़मानए वफ़ात क़रीब है जिस की तैयारी में आप मसरूफ़ हो गए। लेकिन

क्या शहन्शाही थी और क्या राज था	शाहे हफ़्त अक़लीम थे नामे खुदा
हुकमरानी जिन्न व इन्सां पर न थी	बल्कि दरियाओं हवाओं पर भी थी
जानवर तक थे जहाँ भर के गुलाम	और मलक भी आके करते थे सलाम
आप का उड़ता था जब तख़्ते रवाँ	और पहुंच जाता था वह ता आसमाँ
मौत ने सब कुछ मुक़द्दर कर दिया	कैसी दुनिया और क्या उसकी बक़ा

यह ख़्याल आपको कि मेरे बाद तामीराते बैतुलमक़दिस यक़ीनन नातमाम रह जाएगी कोई ऐसी तदबीर हो जिस से उस में फ़र्क़ न आए आखिर खुद वहीं आप ने एक शीशे का कुब्बा बनवाया जिस में तमाम दिन खड़े आप तामीर को भी देखते और यादे इलाही भी करते।

एक रोज़ हस्बे मामूल आप उस कुब्बे में खड़े थे कि यकायक मलकुलमौत उस शीशे के कुब्बे में न मालूम क्यों अंदर गए जिन्हें देखकर हज़रत सुलैमान ने पहचान लिया और साथ ही उससे दर्याफ़्त किया कि ऐ मलकुलमौत मेरी मुलाक़ात के लिए आए हो या रूह क़ब्ज़ करने के लिए? यह कह कर आप ने फरमाया, क्या मुझे इतनी मोहलत दे सकते हो कि मैं घर पहुंच कर अपने अहल व अयाल से रुख़सत हो लूं? मलकुलमौत ने जवाब दिया कि नहीं इतनी भी मोहलत नहीं दे सकता हूँ फिर आप ने फरमाया कि अच्छा इतनी मोहलत दो कि मैं यहीं खड़े खड़े किसी को अपना खलीफ़ा मुक़र्रर कर दूँ। मलकुलमौत बोले कि इतनी भी मोहलत नहीं। फिर आप ने फरमाया कि इतनी मोहलत तो दो कि ज़मीन पर बैठ जाऊं ? मलकुलमौत ने कहा कि मुझे खुदा तआला ने हुक्म नहीं दिया कि तुम्हें ज़मीन पर बैठने भी दूँ आप ने फ़रमाया कि फिर क्या हुक्म हुआ है ? मलकुलमौत ने कहा कि इरशादे आली हुआ है ऐ सुलैमान आप अपने सीने का ज़ोर अपने असा पर देकर खड़े हो जाएं ताकि खड़े खड़े आपकी रूह क़ब्ज़ कर ली जाए। चुनान्चे

उसी वक्त हज़रत सुलैमान अपने असा पर सीना टेक कर खड़े हुए और लब्बैक पुकारते हुए रूह मुबारक मलकुलमौत के सुपुर्द फरमाई।

اِنَّا لِلّٰہِ وَ اِنَّا اِلَیْہِ رَاجِعُوْن

नज़म

क्या शहन्शाही थी और क्या राज था — शाहे हफ्त अक़लीम थे नामे ख़ुदा
हुकमरानी जिन्न व इन्सां पर न थी — बल्कि दरियाओं हवाओं पर भी थी
जानवर तक थे जहाँ भर के ग़ुलाम — और मलक भी आके करते थे सलाम
आप का उड़ता था जब तख़्ते रवाँ — और पहुंच जाता था वह ता आसमाँ
मौत ने सब कुछ मुक़द्दर कर दिया — कैसी दुनिया और क्या उसकी बक़ा

सब से अच्छा पालने वाला

पालने वाला है ख़ल्लाके जहां — कुछ नहीं कर सकतें हैं ये इन्सो जां

एक भरी हुई कश्ती दरिया में जा रही है रात का अंधेरा छाया हुआ है कि यकायक दरिया में तूफ़ान आता है और कड़क और बिजली और हवा के थपेड़ों से कश्ती पाश पाश हो जाती है और तमाम कश्ती वाले दरिया में डूब जाते हैं। एक पटरे पर एक हामिला औरत पड़ी बह रही है जिस की मुद्दते हमल पूरी हो चुकी है और उस पटरे पर उसके शिकम से बच्चा पैदा होता है मौलाए करीम जिस की बड़ी बे परवाह ज़ात है मलकुलमौत को हुक्म देता है कि औरत की जान निकाली जाए। मलकुलमौत ने उस औरत की जान निकाली। मगर बच्चे की तरफ़ से उन को मलाल हुआ कि इस दरिया की मौजों में बच्चे को कौन संभालेगा। जबकि उसकी माँ मर गई। चुनान्चे औरत मर कर पटरे पर से दरिया में गिर जाती है। और नौ ज़ाएदा बच्चा पटरे पर बहा चला जा रहा है और अलस्सुबह वह पटरा एक किनारे पर जाकर ठहरता है जहाँ एक धोबन और धोबी कपड़े धो रहे हैं जो पटरे पर एक नन्हा मुन्ना

बच्चा देखकर खुश हो जाते हैं और बड़ी चाहत से उस बच्चे को उठा लेते हैं और दोनों मियां बीवी निहाल निहाल हो जाते हैं। इन मायूस धोबी और धोबन को यह खबर न थी कि रूए ज़मीन का बादशाह उनकी गोद में पलेगा और परवरिश पाएगा।

कोई इन्सान उस अल्लाह से मायूस न हो
देने वाला है मुरादें सब ही बन्दों को वह

धोबी और धोबन इस बच्चे (शद्दाद) का पाल पोस बड़े चावँ व मौहब्बत से कर रहे हैं यहाँ तक कि बच्चा पाँच बरस का हो गया और इस क़ाबिल हो गया कि घाट पर अपने बाप की रोटी ले जाने लगा। एक रोज़ यह घाट पर बाप की रोटी ले जा रहा था कि देखा एक घोड़े सवार चला जा रहा था। जाते जाते वह ठहर गया और घोड़े पर से उतर कर उस ने एक काग़ज़ की छोटी सी पुड़िया ज़मीन पर से उठाई जिसे खोलकर कर देखा तो यह देखा कि निहायत नफ़ीस सुरमा है जिसे आज़माइश करे तो किस पर करे। सामने से यह लड़का नज़र आया और उसे अपने पास बुला कर तजुर्बा के लिए वह सुरमा उसकी आँखों में लगाया। लड़का अपनी आँखें खोलकर यह देखता है कि ज़मीन के तमाम ख़ज़ाने और दफ़ीने उसे साफ नज़र आ रहे हैं। होनहार मक्कार ने आँखें बन्द करके गुल मचाना शुरू किया कि हाए मेरी आँखें फ़ोड़ डालीं। सवार मारे डर के पुड़िया फेंक कर भागा। लड़का खुश होता हुआ अपने बाप के पास आया और कहा कि इतना खज़ाना यहाँ से निकालो और इतना दफ़ीना यहाँ से निकालो। ग़र्ज़ कि रफ़्ता रफ़्ता यह लड़का दुनिया भर का बादशाह हो गया और लगा खुदाई दावा करने

किस तरह करता है वह जेरों से शेर — और उसको कुछ नहीं लगती है देर
ऐ बशर पहचान उस अल्लाह को — सब से पहले मान उस अल्लाह को
अपने आपे को समझना छोड़ दे — अक़्ल के तारों को अपने तोड़ दे

देखी उस की परवरिश उस की अता
ऐ बशर! अल्लाह पर ईमान ला

फ़िरदौसे इरम की तामीर

शद्दाद एक अकेला रूए ज़मीन का बादशाह हो गया यहाँ तक कि दुनिया भर में बजुज़ इताअत के किसी बादशाह को उसके मुक़ाबले की ताक़त न रही। इस आम हुकूमत के सबब से उसके दिल में गुरूर व तकब्बुर ने घर कर लिया और वह खुदाई का दावा कर बैठा। दीनी रहबरों और इस्लामी आलिमों ने उसको पन्द व नसाइह के तौर पर खुदा के ख़ौफ़ और उसकी इबादत की तरफ रग़बत दिलाई। उसके जवाब में उसने साफ तौर पर कहा कि दौलत व हुकूमत, जाह व हश्म जो इस वक़्त मेरे ज़ेरे फ़रमान है क्या खुदा की इबादात में मुझे उस से ज़्यादा हासिल हो सकता है ? जो कोई किसी की इबादत व खिदमत बजा लाता है वह ज़रूर किसी मंसब व दौलत की तरक़्क़ी हासिल करने की ग़र्ज़ से करता है जिस की मुझे असलन ज़रूरत नहीं।

मुसलिहाने मज़हबी बोले कि ऐ शद्दाद! दुनिया का यह मुल्क व दौलत फ़ानी और चन्द रोज़ा है। अल्लाह तआला अपनी इबादात के बदले जन्नत इनायात करेगा जो दुनिया व माफ़ीहा से बेहतर है। जिसे सुन कर उस ने दर्याफ़्त किया कि भला यह तो बताओ कि उस जन्नत में क्या क्या खूबियां हैं? चुनान्चे बहिश्त के जो जो औसाफ़ अम्बियाए साबिक़ीन से मन्कूल थे बयान किए गए। जिस के जवाब में उस ने कहा कि मुझे उस बहिश्त की कोई ज़रूरत नहीं जिस की मिस्ल मैं खुद बना सकता हूँ।

उसी वक़्त अपने मुदब्बिर अराकीन में से एक सौ आज़मूदा कार अफ़सर तजवीज़ किये और हर एक की मातहती में एक एक हज़ार आदमी मुअय्यन करके एक आलीशान जन्नत तैयार कर देने का हुक्म सादिर किया। और कहा कि कोहे अदन के मुत्तसिल (दस कोस तवील और दस कोस अरीज़ यानी चालीस कोस मुरब्बा हुआ) एक शहर तैयार किया जाए जिस की ज़ीबाइश व हुस्न में कोई कसर बाक़ी न छोड़ी जाए।

चुनान्चे वह शहर तैयार हुआ और इस शान का तैयार हुआ कि दुनिया में जिस की नज़ीर हुई है न हो सकती है। चार दीवारी उस की निहायत

बुलन्द व आलीशान बनाई गई जिसके अंदर एक हज़ार महल तैयार किए गए। एक एक महल में एक एक हज़ार सुतून जो बेश क़ीमत पच्ची कारी से ताबाँ और दरख़्शां कर दिये गए। वस्त शहर में एक नहर बनाई जिसकी शाखें हर महल में पहुंचायीं। कोई महल दिलकश हौज़ व खुशनुमा फ़व्वारों से खाली न था हर नहर और शाखों के दो तरफ़ा अजीब लुत्फ़ अंगेज़ सुरूर ख़ती क़ायम की गई। और उन पर निहायत चहकते हुए वे इन्तिहा ख़ुश आवाज़ व खूबसूरत जानवर छोड़ दिये गए।

इस शहरे आलीशान के चारों तरफ़ पहरेदार और चौकीदारों के पहरे के लिए एक हज़ार मीनार बनवाए। और शहर के अन्दर तमाम महल्लात इन्तिहाई साज़ व सामान से आरास्ता व पैरास्ता कर दिए। जहाँ अक़साम अक़साम के मेवे और तरह तरह के खाने हर वक्त के लिए मुहैया और तैयार हुए।

इस लासानी फिरदौसे इरम की तकमील पूरे बारह साल में हुई जिस के बाद शद्दाद ने तमाम मुल्क में ऐलान किया कि मावदौलत फलां तारीख अपनी साख़्ता बहिश्त में दाखिल होंगे जिस के लिए हर अदना व आला हमारे साथ में उस जन्नत की सैर के लिए तैयार हों। जिस को हम ने निहायत शौक़ व अरमान और आला इन्तिज़ाम व एहतेमाम से तैयार किया है। चुनान्चे तारीख़े मुक़र्ररह पर तमाम शाहाने मुमलिकत व अराकीने सलतनत आ मौजूद हुए।

आज उस बाग़े इरम की सैर है — जिस की हम पल्ला नहीं है कोई शै
आज ऐ शद्दाद तेरा कर्रो फर — तू ही तो आलम में आता है नज़र
आज यह कुछ शान और शौकत तेरी — हर दिली शाहाने हफ़्त अक़लीम की
आज इक आलम है तेरे हम रकाब — दहर पर छाया हुआ है रोब व दाब
कुछ नहीं अन्जाम की तुझ को खबर — मौत अब आई तेरी मौला से डर

जुलूसे शद्दाद

शद्दाद का यौमे जुलूस क़दीमी यादगारों में से एक यादगार है जिस की अरदली में रूए ज़मीन की दल बादल फ़ौजें निहायत जोशे मुसर्रत से नारे

बुलन्द करती हुई खरामाँ खरामाँ दरिया की मौजों की तरह बहिश्ते शद्दाद में दाखिल होने के लिए बढ़ी चली जा रही थीं। हर मुतनफ़्फ़िस इस दरजा आरास्ता व पैरास्ता नज़र आता था कि गोया आज ईद ही नहीं है बल्कि उस से भी हज़ारहा हिस्सा ज़्यादा यौमें सुरूर है और फिलहक़ीक़त होना ही चाहिए था। क्योंकि जिस बाग़े इरम की तैयारी में हफ़्त अक़लीम के ख़ज़ाने खाली किये गए, जिस की निसबत खुद परवरदिगार ने अपनी शहादत बयान फरमाईः لَمْ يُخْلَقْ مِثْلُهَا فِي الْبِلَادِ यानी बाग़े इरम की मिस्ल (फिलवाक़ेअ) दुनिया भर में कोई शै नहीं तैयार की गई आज इस के नज़ारे का पहला दिन है।

शद्दाद एक लासानी अबलक़ घोड़े पर सवार है दूर दूर बड़े बड़े शाहाने मुमलिकत व अराकीने सलतनत प्यादा पा साथ साथ चल रहे हैं जिस से अपनी अपनी शान व शौकत को देखकर वह रह न सका साफ़ झन्कार उठा। कहाँ हैं वे लोग जो मेरा सर दूसरे के सामने झुकाना चाहते थे। किधर हैं वे? जो मुझ जैसे साहिबे कुदरत को ग़ैर के आगे ज़लील करना चाहते थे। आज वह आएं और मेरी लासानी सरवत व बे नियाज़ी का तमाशा देखें! जब फ़िरदौसे इरम का दरवाज़ा क़रीब आया तो बे इन्तिहा ज़र व जवाहर उस पर निसार होना शुरू हुआ उसी जोशे मुसर्रत व आलमे महवियत में सामने से एक गडरया फ़क़ीर आता हुआ मालूम हुआ जिसे एक जरनैल ने रोका और कहा कि यह वक़्त हमारे शहन्शाह के दिली अरमान व ख़्वाहिश पूरी होने का इन्तिहाई पुरजोश वक़्त है तुझ जैसे फ़क़ीर व गदा की इस वक़्त रसाई व सुनवाई हरगिज़ नहीं हो सकती। देख! खबरदार! आगे न बढ़!

गडरया फ़क़ीर उस की ललकार सुनकर ठहरा। एक निगाह भर कर उसे देखा। फ़ौरन जरनैल की गर्दन का मनका ढलक गया और पिछले क़दमों पर गिर गया। इस असना में शद्दाद अपनी बहिश्त के दरवाजे पर पहुंच चुका था। यहाँ तक कि एक पाँव अपना उसकी दहलीज़ पर रख चुका था। और दूसरा घोड़े की रकाब में से निकाल रहा था कि यह गडरया फ़क़ीर शिकस्ता हाल फटे कपड़े फ़िरदौसे इरम की देहलीज़ पर पहुंचकर उस के सामने आ

खड़ा हुआ। शद्दाद ताज्जुब से कहता है

शद्दादः

कौन है तू? ओ निडर! बेकस गदा
तेरे आने का यहाँ क्या काम था
हैफ़ लोगों ने तुझे रोका नहीं
इस जगह आते तुझे देखा नहीं
है बड़ा गुस्ताख़ तू। ओ बे अदब
आज तू है और मेरा ग़ैज़ो व ग़ज़ब
कितनी जुर्अत तू ने की ओ नाबकार
किस जगह आकर हुआ मुझ से दो चार
हैफ़ क्या तुझ को नहीं मालूम था
दिन है यह खुल्दे इरम की सैर का
दाद और फ़रियाद का यह दिन नहीं
ऐ गदा! ऐ साइल! ऐ उज़लत गुज़ीं
क्यों हुआ तू ऐश में आकर मुखिल
क्यों किया तू ने मुकद्दर मेरा दिल
वह क्या आज तूने इरतिकाब
है रवा तुझ पर कि हो मेरा अज़ाब

जवाबे साइलः

कौन हूँ मैं! मुझ से तू वाक़िफ़ नहीं
नाम से मेरे लरज़ती है ज़मीं
कांपती है मुझ से एक दुनियाए दूँ
जानता भी है मुझे! मैं कौन हूँ
शीशए दिल तोड़ना है मेरा काम
हसरतों का खून करता हूँ मुदाम
क़ाबिज़ुल अरवाह इज़राईल हूँ
जिस से है हर एक की हालत ज़बूँ

शद्दादः

दस्त व पा में जिस के रशा आ गया
सर से पा तक सुनते ही थर्रा गया
छुट गई नब्ज़ गिरा घुटनों के बल
आ पुकारी सर पे जब उस की अजल
जिस ने फिर हसरत भरे दिल से कहा
काश मिल जाए मुझे मोहलत ज़रा
एक नज़र बाग़े इरम को देख लूँ
हसरत व अरमान का होता है खूँ

मलकुल मौतः

मैं वह हूँ महकूम उस माबूद का
ठहरना एक सांस है मुझ पर हराम
काम अपना कर गुज़रता हूँ मुदाम
और यहीं बेदम करूंगा मैं तुझे
एक दम मोहलत न दूँगा मैं तुझे
हसरतें सब दिल की दिल में ले गया
आखिरश शद्दाद ने दम दे दिया
क्या ठिकाना है खुदा के हुक्म का
खुल्द की चौखट पे मर कर गिर पड़ा
हैफ़ है हम पर कि जो इबरत न हो

كما قال الله تَبَارَكَ وَ تَعَالىٰ إِذَا جَآءَ أَجَلُهُمْ لَا يَستاخِرُوْنَ سَاعَةً وَّلَا يَسْتَقْدِ

यानी जब क़ज आ पहूंती है तो क वह एक लहज़ा आगे पीछे नहीं हो सकती।

चुनान्चे वह जुलूसे फ़ाख़िरा एक आन वाहिद में सब दरहम बरहम हो गया। इधर शद्दाद बे दम हो कर फ़िदौसे इरम के दरवाज़े में गिरा। उधर आसमां में एक कड़क पैदा हुई जिस के सदमए जान्काह ने बजाए बाग़े इरम तमाम मखलूक़ को मुल्के अद्म की सैर कराई।

एक लतीफ़ा

जब मलकुलमौत ने शद्दाद की जान निकाल कर हुजूरे खुदावंदी में हाज़िरी दी तो खुदाए क़ादिर क़य्यूम ने भलकुलमौत से फ़रमाया कि ऐ इज़राईल! यह बताओ कभी तुम्हें जान निकालने में किसी पर तरस या रहम भी आया? अर्ज़ किया कि मौलाए करीम! दो जगह मुझे अलबत्ता बहुत तरस आया और उन दोनों की रूह निकालते हुए मुझे रोना भी आ गया। फ़रमाया कहाँ, कहाँ? मलकुलमौत ने अर्ज़ किया हुज़ूर एक तो उस मस मौक़ा पर जबकि एक जहाज़ समुन्दर में तैरता हुआ चला जा रहा था और इस में बहुत से आदमी औरतें और व मर्द सवार थे। जिन्हें एक मौक़ा पर रात हुई और इस समुन्दर में घटाएं छा गईं जिन में से सख़्त बारिश शुरू हुई। साथ ही उस के तूफ़ान

आया जिस से वह जहाज पाश पाश हो गया और उस के तमाम मुसाफिर मर गए। फिर खुदावंदा मैंने देखा कि उस जहाज़ का एक तख़ता बहता हुआ उस अंधेरी रातों गोते लगा रहा है जिस पर एक हामिला औरत भी है। जिस को पैदाइश के दर्द लाहिक़ हुए और उसी खतरनाक जगह उस औरत के शिकम से बच्चा पैदा हुआ। मौला! इधर बच्चा पैदा हुआ उधर तेरा हुक्मे आली नाफिज़ हुआ कि औरत की जान निकाल ली जाए। पस ऐ मौलाए करीम! उस वक़्त मैंने औरत की जान निकालने को तो निकाल ली। लेकिन उस बेकस बच्चे पर मुझे रोना आ गया कि ऐसे नाजुक वक़्त में इस का कौन मददगार और मुहाफिज़ होगा और एक उस वक़्त मुझे तरस आया कि जब शद्दाद बादशाह की मैंने जान निकाली। क्योंकि वह एक नज़र देखने के लिए अपनी बनाई हुई बहिश्त के लिए बहुत कुछ मेरे सामने रोया और आजिज़ी व मुनाजात की। मगर मैंने तेरा हुक्म पूरा किया और उसकी रूह क़ब्ज़ कर ली। लिखा है कि मलकुलमौत से इरशादे खुदावंदी हुआ कि ऐ क़ाबिज़ुलअरवाह एक बच्चे पर दो जगह तरस खाया? अर्ज़ किया कि हुज़ूर एक बच्चे पर उसकी बेकसी देख कर और एक बादशाह शद्दाद पर उसकी तमन्नाएं ख़ाक में मिलते देखकर दो जगह रहम आया। फिर इरशादे आली हुआ कि ऐ मलकुलमौत यह एक ही जगह तो रहम आया। अर्ज़ किया कि नहीं हुज़ूर! दो जगह! इस पर हुज़ूर रब्बुलआलमीन ने तबस्सुम फ़रमाया और कहा कि ऐ क़ाबिज़ुलअरवाह! वह तख़ते पर बहता हुआ बच्चा शद्दाद ही तो था जिस को हम ने महज़ अपने फ़ज़्ल से परवरिश फ़रमाया और उस बेकस को कितना बड़ा बादशाह कर दिया। देखा तुम ने मेरी कुदरत कामिला का तमाशा!

नज़म

पालने वाला हूँ मैं हर एक का — एक हैं मेरे लिए शाह व गदा
सब का खालिक़ और मालिक मैं ही हूँ — मैं ही वह कादिर हूँ जो चाहूँ करूं
मेरे ही क़ज़ा में हैं चौदह तबक — थर थराए हैं मुझ ही से लक व दक
मै ही हूँ खल्लाके आलम बिलयकीं — मैं ही हूँ जिस का कोई सानी नहीं
परवरिश हर एक की मेरे साथ है — पालना हर एक का अदना बात है
बे कसी पर जिस की तू रोया वहाँ — मैंने उस को दे दिया सारा जहाँ
परवरिश शद्दाद की देखी ज़रा — मैं ने क्या कुछ कर दिया उस को अता
तरस खाया तूने जिस मासूम पर — कर दिया शद्दाद शाहे बहर व बर

मूसा कलीमुल्लाह

जब मूसा अपनी और अपने भाई हारून की औलाद को आख़िरी नसीहतें और वसियतें करने में मसरूफ़ हुए तो एक रोज़ मलकुलमौत आप के पास आऐ और पैग़ामे मौत आप को सुनाया जिसे मूसा ने नापसन्द किया मलकुलमौत ने हुज़ूर रब्बुलइज़्ज़त में जाकर अर्ज़ किया कि आप के प्यारे मूसा मौत को ना पसन्द करते हैं। वहाँ से इरशाद हुआ कि ऐ जिबरईल! हमारे बन्दे मूसा के पास तुम जाओ और उन से कहो कि तुम्हारा माबूद यह फ़रमाता है कि ऐ मूसा! अगर तुम को ज़िन्दगी और भी मतलूब है तो तुम एक भेड़ की कमर पर हाथ रखो मुझे क़सम है अपने इज़्ज़ व जलाल की जितने बाल तुम्हारे हाथ के नीचे आजाएंगे उतने ही साल की ज़िन्दगी तुम्हारी और अता फ़रमाऊंगा! चुनान्चे जिबरईल ने यह पयामें एज़दी हजरत मूसा को सुनाया। आप बहुत मसरूर हुए और फ़रमाया कि ऐ जिबरईल मैंने भेड़ की कमर पर हाथ रखा और उस के बालों की गिनती के बराबर मेरी उमर भी दराज़ हो गई फिर उस के बाद क्या होगा? हज़रत जिबरईल ने फ़रमाया फिर आख़िर मौत। उस पर अल्लाह के लाडले और प्यारे मूसा बोले कि ऐ जिबरईल! आख़िर मौत है अव्वल मौत है फिर अभी मैं क्यों न इस पर रज़ामंद

हो जाऊं मलकुलमौत को मेरे पास भेज दो ताकि मैं निहायत खुशी से अपनी रूह उन के हवाले कर दूँ, चुनान्चे जिबरईल उन को सलाम करके रुख़सत हो गए।

अब मूसा का दिल घबराया और वह उठ कर सीधे बयावान में पहुंचे वहाँ देखा कि सात आदमी निहायत शादाब और पुरफज़ा मक़ाम पर बैठे हुए निहायत नफीस कब्र तैयार कर रहे हैं आप ने उन से दर्याफ़्त किया कि यह क़ब्र किस के लिए तैयार की जा रही है?

उन्होंने जवाब दिया कि खुदा के दोस्तों में से एक प्यारे दोस्त के लिए यह कब्र तैयार की जा रही है। जिस का क़द तुम्हारे ही क़द के बराबर है। मूसा क़ब्र के तैयार होने तक वहीं खड़े सैर देखते रहे। जब वह क़ब्र बन कर तैयार हो गई तो फ़रमाया क्या मैं तुम्हारी इजाज़त से ज़रा की ज़रा क़ब्र में लेट कर इसकी बहार देख सकता हूँ उन लोगों ने बखुशी इजाज़त दी यहाँ यह भी मालूम कर लेना चाहिए कि वे सात आदमी जो कब्र खोद रहे हैं वे कौन थे? जिबरईल मीकाईल इसराफील इज़राईल तीन और मुक़र्रब फ़रिश्ते थे बहर हाल उनकी इजाज़त ले कर ज़रा की ज़रा प्यारे मूसा उस क़ब्र में लेटं और लेट कर फरमाया क्या अच्छी क़ब्र है। सुब्हानल्लाह

मलकुलमौत ने उसी वक़्त हज़रत मूसा को एक फूल सूँघाया जिस से आप जां बहक़ हो गए। और वफ़ात पा गए।

اِنَّا لِلّٰہِ وَ اِنَّا اِلَیْہِ رَاجِعُوْنَ

हो गए मूसा नबी हक़ की रज़ा
थी अमानत जिस की उस को सौप दी
कब्र में चुपचाप कैसे सो गए
आखिर इस दुनिया की है सब के लिए
ताक में है मौत एक एक चीज़ की
तूर पर जो महवे जलवा थे कभी
कुर्ब से गो मर्तबा अक़रब हुआ
तूर पा मौला से थे जो हम कलाम
खाक में अफलाक भी अंजाम को

आज दम जिस का था उस को दे दिया
लाडले मूसा ने उफ तक भी न की
आह जो प्यारे कलीमुल्लाह थे
उस में दाखिल हैं सब ही छोटे बड़े
रफ़्ता रफ़्ता जिस में फना होंगे सभी
आज उनकी लाश मिट्टी में दबी
मौत का चखना था लेकिन ज़ायका
आज लोगों का नहीं लेते सलाम
है वक़ा इसहाक़ उस के नाम को

वफ़ाते शरीफ़ हज़रत मुहम्मद मुसतफ़ा ﷺ

नज़्म

किस का सीना किस का दिल किस का जिगर
सुन सके जो रेहलते ख़ैरुल बशर
शक़ हुआ जाता है सीना आह! आह
है फ़ुर्क़ते महबूबे करती है तबाह
बन के आंसू दिल बहा जाता है क्यों
हाल अबतर यह हुआ जाता है क्यों
क्यों जिगर है छलनी छलनी ऐ फ़ता
क्यों है यह हर सिम्त से आह बुका
हो रहा है क्यों यहाँ ज़िक्रे वफ़ात
क्यों मुसलमां मल रहे हैं अपने हाथ
उन का हादी आह उन का रहनुमा
उन का आक़ा आह उन का पेशवा
अपना साया वह उठा लेने को है
दाग़ फ़ुर्क़त का उन्हें देने को है
नज़अ का आलम हुवैदा हो गया
मौत का एक दर्द पैदा हो गया
क़ाविज़ुलअरवाह उन पर झुक गया
ता करे वह रूह को तन से जुदा
जब यह देखा हज़रते जिब्राईल ने
कर लिया उस वक़्त मुंह अपना परे
होके आज़ुर्दा नबी ﷺ ने यह कहा
ऐ अख़ी जिब्राईल ऐ मुशफ़िक़ यह क्या
दोस्ती से क्या उठाया अपना हाथ
दे चुके क्या अहमदे मुरसल का साथ
चीख़ उठे जिब्राईल सुनते ही वहीं
हिचकियां रूहुलकुद्स की बंध गईं
और कहा ऐ रहमतुल्लिल आलमीं ﷺ
क्यों कर देखे आह जिब्राईले अमीं
नज़अ की हालत फ़िराक़े अहमदी ﷺ
मौत और उस साहिबे मेराज की
अर्श व कुर्सी तक गुज़र जिस का हुआ
क़ाब क़ौसैं उस का एक ज़ीना हुआ
आह जिन आंखों ने देखा वह समां
नज़अ देखें! यह उन्हें ताक़त कहां

उसके बाद हज़रत जिब्राईल ने निहायत अफ़सोस के साथ कहा कि काश मैं आप के क़दमों पर निसार होता। ताकि यह दाग़े मुफ़ारक़त देखने में न आता। फिर कहा कि अशरफ़ुन्नबी अल जान्न वलइन्सान! अगर आप की मर्ज़ी मुबारक हो। तो मज़ारे अक़दस अर्श अज़ीम के नीचे या जन्नतुल फ़िरदौस में बनाया जाए! जनाब रसूले करीम ﷺ ने महज़ अपनी उम्मत की मईय्यत और

उन की रिफ़ाकत के खयाल को पेशे नज़र करके फ़रमायाः ऐ जिब्रईल !

नज़म

किस तरह क्यों कर गवारह मैं करूं　　उम्मतें आसी कों क्यों कर छोड़ दूं

जा बना जब खुल्द में मेरा मज़ार　　किस तरह उम्मत को आएगा क़रार

साथ इन का मुझ से छुटने का नहीं　　बस यहीं मदफून हूंगा मैं यहीं

हुज़ूर के पास पानी का एक प्याला रखा हुआ था। जिस में बार बार अपना हाथ भिगो कर बआलमे नज़अ़ अपने चेहरे पर फेरते थे। चेहरए मुबारक सुर्ख़ हो जाता कभी ज़र्द हो जाता। उस वक़्त आप ने फ़रमाया لَا اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰهُ सिवाए ख़ुदा के कोई माबूद नहीं फिर फ़रमाया اَللّٰهُمَّ اِنَّ الْمَوْتَ سَكَرَاتُ इलाही मौत में बड़ी तकलीफ़ें होती हैं।

उस के बाद उसी हालत में जबकि हुज़ूरﷺ की पेशानी मुबारक पसीनों में अर्क़ अर्क़ हो चुकी थी, उम्मत की तरफ़ ख़िताब करके फ़रमाया اَلصَّلٰوةَ وَمَا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ ! नमाज़ की पाबंदी रखना। लौन्डी गुलाम या अपने मातहतों के साथ कमाले रिआयत से पेश आना उस के बाद नीज़ सब से आख़िर में आप की ज़बान पर यह कलिमा आया اَلرَّفِيْقُ الْاَعْلٰى यानी मैं परवरदिगार की हुज़ूरी को पसंद करता हूं। यह इस लिए आप ने फ़रमाया किः

बुख़ारी शरीफ़ की एक हदीस में हज़रत आएशा रज़ि॰ रिवायत करती हैं कि फ़रमाया रसूले करीमﷺ ने कि तमाम अंबिया अ॰ को उन की वफ़ात से पहले इख़्तियार दिया जाता है कि चाहें वह दुनिया में रहना पसंद करें चाहे वह मलाए आला इख़्तियार करें। तो जिस वक़्त आप ने اَلرَّفِيْقُ الْاَعْلٰى को पसंद फ़रमाया बारहवीं रबीउलअव्वल सन् 11 हिजरी 8/जून 632 ई॰ को हुज़ूरﷺ ने इंतिक़ाल फ़रमाया। اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ

नज़म

बेसाख़्ता उम्मत के दिमागों में समाया उस रूहे मुतह्हर ने जो ख़ुशबू में बसाया
मेराज को जाते हैं जनाबे शहे वाला फ़िर लायेंगे उम्मत के लिए फ़ज़्ले ख़ुदा का
आलम यह हुआ आम वहाँ होश व ख़िरद का शशदर हुआ और रह गया एक एक को तक्ता

तमाम जांनिसाराने नुबुव्वत व आलम अहले इस्लाम का अजीब आलम था कहीं बहोशी वाक़ेअ है तो कहीं सक्ते का आलम। कहीं मुर्ग़े नीम बिस्मिल की तड़प है कहीं जिगर ख़राशे शोरे मातम। यहां तक कि बाज़ आशिक़ाने उम्मत इस नाक़ाबिले बर्दाश्त आलम में भी सहार न कर सके। जनाब ख़तमुलअंबिया हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह ﷺ के इंतिक़ाल की ख़बर सुनते ही इंतिक़ाल कर गए।

एक अर्से के बाद जब तबीयतों में इज़ाफ़ा हुआ तो हज़रत अली रज़ि० और हज़रत अब्बास रज़ि० और हज़रत अक़ील रज़ि० कमर बस्ता हो कर हुज़ूर की तजहीज़ व तकफ़ीन के लिए उठे। हज़रत उसामा रज़ि० बिन ज़ैद ने पानी डाला और हर सहाबा ने मअ मलबूस आं हुज़ूर सरवरे काएनात को नहलाना शुरू किया जब नबी मुतह्हर को नहला चुके। तो अहले बैत उज्ज़ाम व सहाबए किराम ने तीन सफ़ेद कपड़ों में लपेट दिया। वह रूए ताबां जिस का चुमकारा मश्रिक़ से मग़रिब तक फैल चुका था। उसके बाद लोग आने शुरू हुए। सब ने बग़ैर इमाम के नमाज़े जनाज़ा अलाहिदा अदा की। मर्दों के बाद मदीना की औरतें जमा हो कर आईं और नमाज़ पढ़ी। उस के बाद तमाम इतफ़ाल व कम सिन बच्चे आए। फ़िर बइत्तफ़ाक़े राए हज़रत अबू तल्हा रज़ि० ने उसी जगह जहां हुज़ूर ﷺ ने इंतिक़ाल फ़रमाया था लह्द ख़ोदी ख़ोदी और फ़िर अपने ज़ख़्मी कलेजे को थाम थाम कर हाथों हाथ आप को दफ़न किया और पटाव रख कर ज़मीन को बराबर कर दिया। हैफ़ उस वक़्त अपने दिलों को मुट्ठी में लिए हुए वापस हो रहे थे। कि कहीं हज़रत फ़तमा ज़ोहरा रज़ि० पुकार उठीं–

नज़म

ख़ाक आलूद हैं क्यों उम्मत के हाथ आज यह कैसी नई है वारदात
दफ़्न करके किस को यह आते हैं लोग आह यह कैसा मदीना में है सोग
मिट गया सूरज गहन में आ गया क्यों मदीना में अंधेरा छा गया
किस तरह क्यों कर गवारह हो गया दफ़न करना साहिबे मेराज

सब्र दूं क्यों कर मैं अपने आप को
तुम छुपा आए हो मेरे बाप को

हज़रत अनस कहते हैं कि मैं उम्मुल मोमिनीन आइश के दरवाज़े पर होता हुआ गुज़रा जो दर्द नाक लहजा में यह फ़रमा रही थीं:

ऐ वह ज़ात! जिस ने कभी रेशमीं कपड़ा नहीं पहना। जो कभी नर्म और गुद गुदे बिछौने पर नहीं सोए। कभी जौ की रोटी पेट भर कर नहीं खाई सिवाए बोरिया के कभी तख़्त और चारपाई को पसंद नहीं किया। दोज़ख़ के ख़ौफ़ से किसी रात चैन से नहीं सोए।

आख़िर मौत को भी फ़ना

जहाँ हर चीज़ के लिए फ़ना है। वहाँ मौत को भी एक दिन फ़ना है। जिस ने आलम को फ़ना का बाज़ार दिखाया एक दिन वह भी फ़ना होगी। और वह तल्ख़ ज़ायक़ा जो एक एक चीज़ को चखाया था ख़ुद भी चख़ना होगा क्योंकि كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ की यही शान है।

जब तमाम जन्नती जन्नत में पहुंच चुकेंगे। उस वक़्त मलकुलमौत फ़रिश्ते को हुक्म होगा कि ऐ मलकुलमौत! मौत को मुजस्सम शक्ल में दो ज़ख़ी व जन्नती लोगों के वस्त में ला कर हाज़िर करो। चुनान्चे हज़रत इज़राईल मौत को एक भेड़ की सूरत में दोज़ख़ और जन्नत के दरमियान लाकर हाज़िर करेंगे। और फिर तमाम अहले जन्नत और अहले नार को पुकारा जाएगा कि ऐ जन्नत वालो! और एक दोज़ख़ वालो! देखो इसे पहचानो यह कौन है!

दोनो जमाअतें जवाब देंगी। ख़ुदावंदा! हम ख़ूब जानते हैं। यही है वह

जिस ने आलम के सामने पर्दा हाइल किया। और यह आलम दिखाया यही है वह जिस ने सिवाए तेरी आलीजाह के किसी को बाक़ी नहीं छोड़ा। इलाहा! हम खूब जानते हैं यह मौत है। इस के बाद हज़रत याहया वहाँ तलब होंगे। जब वह हाज़िर होंगे तो हुक्म होगा कि ऐ याहया यह मौत है इसे आप अपने हाथ से ज़ब्ह करो। चुनान्चे हज़रत याहया ज़ब्ह कर देंगे जब वह ज़ब्ह हो चुकेंगी तो एक निहायत दर्द नाक आवाज़ बुलंद होगी जो दर हक़ीक़त एक आख़िरी फ़ैसला का ज़बरदस्त हुक्म होगा।

يـا اَهْـلَ الْـجَنَّةِ خُـلـودٌ وَ يَا اَهْلَ النَّارِ خُلُوْدٌ لَا مَوْت यानी ऐ अहले जन्नत! तुम्हें हमेंशा के लिए जन्नत और उस की बहारें मुबारक। अब न तुम यहाँ से निकाले जाओगे और न कभी मौत आएगी। और ऐ अहले नार। तुम हमेशा हमेशा के लिए दोज़ख़ में रहे। अब न यहाँ से तुम निकलोगे और न तुम्हें मौत आएगी।

इस आख़िरी फ़ैसला को सुनकर अहले जन्नत में इंतिहाई सुरूर और जोश व ख़रोश और अहले नार में इंतिहाई सदमा और आह व बुका का तलातुम पैदा होगा। जन्नती उस हमेशगी के सुरूर वज्द में जन्नत को भूल जायेंगे। और दोज़ख़ी उस हमेंशगी के सदमए जांकाह में दोज़ख़ और उस के अलम नाक अज़ाबों को भूल जायेंगे। जिसे मौला फ़रमाता है। وَاَنْـذِرْهُـمْ يَـوْمَ الْحَسْرَةِ اِذْ قُضِىَ الْاَمْرُ यानी ऐ नबीﷺ डराओ उन को उस हसरत के दिन से जबकि आख़िरी फ़ैसला सुनाया जाएगा।

नज़म

मौत भी आख़िर फ़ना हो जाएगी जान उस की भी हवा हो जाएगी
अल्लाह अल्लाह शाने यकताई तेरी मौत को तल्ख़ी चखाई मौत की
मौत से ग़ाफ़िल हुआ इन्सान क्यों बन के दाना यह हुआ नादान क्यों
वस्ले मौला की यही तदबीर है यादगारी उस की बस अकसीर है

आदमी सर्कश नहीं होगा कभी
याद उस को हो जो अपनी मर्दनी

मौत का समां

मौत के ख़तरे से ग़ाफ़िल किस क़दर इन्सान है
कैसा आक़िल कैसा दाना और क्या नादान है

कौन पूछे उस से कि ऐ होशियार तुझ को क्या हुआ आने वाली मौत से क्यों लागर्ज़ तू हो गया
तेरे इस घर बार की तैयारियां देखे कोई और तैयारी वहाँ की यह बता क्या तू ने की
ता अबद रहना है तुझ को जिस जगह ऐ अक़्ल मंद होश वाले! कर वहाँ का देख दरवाज़ा न बंद
कुछ तो तैयारी वहाँ की भी तू कर ऐक जी शुऊर और फ़िरासते आदमियत का दिखा कुछ तो ज़ुहूर
कैसा मुँह ढाँके हुए यह जा रहा है आदमी हाए कैसी बेकसी उस पर बरसती है पड़ी
चार के काँधे पे है तू ऐ बशर ऐ बाकमाल ज़िन्दगी में उस लदाई का कभी आया ख़याल
एक दुनिया एक उक़बा दो ही घर हैं ऐ बशर एक का कुछ भी नहीं और एक का यह कर्रो फ़र
साथ अपने कुछ भी सामां तू यहाँ का ले चला या कि ख़ाली हाथ उस दुनिया से तू रुख़सत हुआ
ख़्वाब में भी जिस की पेशी का नहीं आया ख़्याल आज ऐ इन्सान तू है और रब्बे ज़ुल जलाल
कौन है मालिक तेरा और कौन है ख़ालिक़ तेरा किस से आज़ादी का तू ने ज़िन्दगी में दम भरा
चार के काँधे पे जाना याद कर ऐ होश मंद एक अँधेरी गौर में जब तुझ को सब कर देंगे बंद
तुझ से फिर पूछेगा वह रब्बुल उला ख़ालिक़ तेरा ज़िन्दगी में याद रखा मुझ को या भूला रहा
तुझ को भेजा था फ़क़त अपनी इबादत के लिए या कि भेजा था गुनाहों और ग़फ़लत के लिए
अक़्ल वाले यह बता क्या उस को तू देगा जवाब जबकि वह ख़ालिक़ तेरा पूछेगा सब तुझ से हिसाब

अपना मरना याद रख इस्हाक़ ऐ ग़फ़लत भरे
ज़िन्दगी में ताकि तू अल्लाह से डरता रहे

سُبْحَانَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ وَسَلَامٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ
وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ

नाचीज़ इस्हाक़ (मरहूम व मग़फ़ूर) मुदीरुल वाअज़



designed by Meher Alam 9899419316

Rs.15/-